मिशन अंकुर

NIPUN BHARAT

मध्य प्रदेश बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन

दृष्टि पत्र

मध्य प्रदेश बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन

मिशन अंकुर

दृष्टि पत्र

अंकुर मध्य प्रदेश बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान

NIPUN BHARAT

समग्र शिक्षा

मिशन अंकुर

मूलभूत शैक्षिक दक्षताएं भविष्य की शिक्षा का आधार हैं। समझ के साथ पढ़ने में सक्षम होना और लेखन व गणित के साधारण सवाल हल करना, न केवल सीखने के परिणामों को तत्काल प्रभावित करता है, अपितु यह हमारे बच्चों की दीर्घ-कालिक उपलब्धियों को भी प्रभावित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यह निर्धारित किया गया है, कि मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान एक तात्कालिक राष्ट्रीय मिशन बनना चाहिए। इसी विचार के तहत माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास हेतु राष्ट्रीय स्तर पर "निपुण भारत" अभियान प्रारंभ किया गया है। जिसे मध्यप्रदेश में हम "मिशन अंकुर" के नाम से संचालित कर रहें हैं।

मध्यप्रदेश हमेशा बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान की दक्षताओं (एफ.एल.एन.) के परिणामों में सुधार की दिशा में काम करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। "मिशन अंकुर" के तहत हमें यह सुनिश्चित करना है कि, सभी बच्चे कक्षा 3 तक पढ़ने-लिखने और सरल संख्यात्मक प्रश्न हल करने में सक्षम हो जाएँ।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राज्य के प्रत्येक शिक्षक, अभिभावक और अकादमिक रूप से सक्षम व्यक्ति से आगे आकर कार्य करने की आवश्कता है। इस दिशा में शासन के द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण, मॉनिटरिंग और शासन प्रक्रियाओं को सशक्त बनाने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है, कि मिशन अंकुर हमारे बच्चों को एक ऐसे सफल विद्यार्थी के रूप में सक्षम बनाएगा, जो जीवन में उत्कृष्टता लाने, सामाजिक भावनात्मक रूप से मजबूत होने और अपने भावी जीवन में सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाएगा। मिशन अंकुर हमारे नन्हें विद्यार्थियों को देश का एक सक्षम नागरिक बनाएगा, जो हमें एक सशक्त और बेहतर भविष्य की ओर ले जाएगा।

मध्यप्रदेश के मिशन अंकुर से संबन्धित विद्यार्थियों, शिक्षकों, पालकों और स्कूल शिक्षा विभाग को अभियान की सफलता हेतु मेरी असीम शुभ कामनाएं।

शिवराज सिंह चौहान

मिशन अंकुर

प्रिय बंधु-भगिनी गण,

हमारी भारतीय संस्कृति में शिक्षा प्रदान करना एक पुण्य कार्य माना जाता है, आप सब भी शिक्षा प्रदान करने के इस पवित्र कार्य से जुडे हुए हैं, तदैव हेतु मैं आप सभी को साधुवाद अर्पित करता हूॅ। आपके प्रयत्नों और समर्पण से ही हमारे नन्हें मुन्ने, भैया-बहिनों का भविष्य बनता है। आप पीढ़ियों के निर्माता हैं, समाज और देश के विकास में आपकी भूमिका सर्वोपरि है।

यह आपका और सरकार का संयुक्त दायित्व है कि हम अपने विद्यार्थियों को सर्वोत्तम बनाएं। इसके लिए हमें उनकी प्रारंभिक शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान प्रदान करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बाल्यकाल में ही विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास पर विशेष बल दिया गया है। जिसके लिए माननीय प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर "निपुण भारत" अभियान प्रारंभ किया गया है। जिसे मध्यप्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान के मार्गदर्शन में हम "मिशन अंकुर" के नाम से संचालित कर रहें हैं।

मिशन अंकुर का लक्ष्य है कि कक्षा तीसरी तक हर विद्यार्थी मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के कौशल प्राप्त कर सके। आशय यह है कि हमारे प्रदेश के नन्हें भैया बहिन कक्षा पहली में प्रवेश के बाद जब कक्षा तीन तक पहुॅचे तो वे सामान्य रूप से पढने-लिखने और गिनने में सक्षम हों। इस कार्य को हमें एक जन अभियान के रूप में संचालित करना है। जिसमें शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के शैक्षिक रूप से समृद्ध व्यक्तियों, सभी का योगदान महत्वपूर्ण है।

मिशन अंकुर की सफलता हेतु शिक्षकों के प्रशिक्षण, पठन-पाठन सामग्री का निर्माण, सह शैक्षणिक गतिविधियों का निर्धारण, शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता सहित हरसंभव सहयोग और सामग्री शालाओं को उपलब्ध कराने के लिए हमारा स्कूल शिक्षा विभाग कृत संकल्पित है। आवश्यकता है आप सभी के समर्पित भावों के साथ कार्य निष्पादन की।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि, आप सभी के सहयोग से मिशन अंकुर की भावना अनुसार हम लक्ष्य प्राप्ति करेंगे और इस अभियान से जो बीज अंकुरित हो पल्लवित होगा उसके पुष्पित फल, प्रदेश, देश और संपूर्ण वैश्विक समाज के विकास में सहायक होंगे।

मिशन अंकुर की अपार सफलता हेतु मेरी स्नेहिल शुभ कामनाएं।

इन्दर सिंह परमार

40
80
90

मिशन अंकुर

आधारभूत साक्षरता और संख्याज्ञान (एफ.एल.एन.) के लिए संचालित निपुण भारत अभियान/मिशन अंकुर, कक्षा 3 के अंत तक बच्चों में समझ के साथ पढ़ने-लिखने और गणित की बुनियादी क्षमता के विकास पर जोर देता है। पढना, लिखना और गणितीय दक्षताएं हासिल करना ये वे महत्वपूर्ण कौशल हैं जो भविष्य में बच्चों को उच्च कक्षाओं में अधिक अर्थपूर्ण ढंग से सीखने और समस्या समाधान एवं विकासात्मक सोच जैसे 21वीं सदी के कौशल हासिल करने में सक्षम बनाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के प्रकाश में हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2026-27 तक प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता और संख्या-ज्ञान के कौशल विकसित करना है। मूलभूत स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणित की साधारण दक्षताओं को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए बाकी नीति प्रासंगिक होगी।

मध्यप्रदेश में मिशन अंकुर, के माध्यम से हम अपने बच्चों (age 3 to 9 years) जिनमें से कई पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं, को साक्षरता और संख्याज्ञान के मूलभूत कौशलों से परिपूर्ण कर सकेंगे। इस मिशन में हमारे शिक्षक साथी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगें। जिन्हें सहज शिक्षण के लिए कक्षाओं को बच्चों के लिए अधिक इंटरैक्टिव और रूचिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को उन बच्चों के साथ अधिक समय बिताना चाहिए जो अध्ययन में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। इसके लिए मिश्रित समूह भी बनाए जा सकते हैं जहां कमजोर बच्चे साथियों के सहयोग से लाभान्वित हों।

शिक्षा के क्षेत्र में एक सफल मिशन की परिकल्पना शिक्षकों, माता-पिता, समुदाय और स्थानीय निकायों की सक्रिय भूमिका के बिना नहीं की जा सकती है। इस मिशन की योजना क्रियान्वयन और पर्यवेक्षण में भी सामुदायिक भागीदारी कारगर सिद्ध होगी।

विभाग के द्वारा मिशन अंकुर की सफलता सुनिश्चित करने के लिए एक सुविचारित रोडमैप के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण, पठन-पाठन सामग्री का निर्माण, सह शैक्षणिक गतिविधियां, शिक्षण सहायक सामग्री और विभागीय समर्थन अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। आशा है आप सभी के सहयोग और समर्थन से हम छात्रहित के इस मिशन में अवश्य सफल होंगे।

मिशन अंकुर की सफलता के लिए मेरी ओर से आप सभी साथियों को शुभकामनाएं।

रश्मि अरूण शमी

मिशन अंकुर

नींव की मजबूती पर ही इमारत की ऊचाई निर्भर रहती है। एक पेड़ उतना ही मजबूत होता है जितनी मजबूत उसकी जड़ें। मतलब यही है कि किसी भी क्षेत्र में भविष्य की बेहतरी के लिए प्रारंभ में ही पुख्ता तैयारियां करनी चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र की बात करें तो अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों के भी यही निष्कर्ष हैं कि, मनुष्य जीवन के प्रारंभिक वर्ष उच्च मस्तिष्क विकास की अवधि है, क्योंकि बच्चे तेजी से विकसित होते हैं और सीखते हैं। यह बच्चों की आधारभूत शिक्षा के निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण चरण साबित होता है। जिससे वे आजीवन सहजता से समझ सके।

मध्यप्रदेश में मिशन अंकुर, हमारे बच्चों की शैक्षिक जड़ों को मजबूती प्रदान करने का ही कार्यक्रम है। जिसके तहत लक्ष्य है कि हमारे प्रदेश के नौनिहाल विद्यार्थी जीवन के प्रारंभिक दिनों में ही अर्थात कक्षा तीसरी पूर्ण करने तक पढ़ने, लिखने और गिनने की बुनियादी दक्षताएं हासिल कर लें। इस कार्यक्रम में जो मिशन शब्द है वो हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, कि मिशन की सफलता ही हमारा ध्येय है और इसके लिए हम पूर्ण सामर्थ्य से हर संभव कार्य और प्रयत्न करेंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र ने इस मिशन की सफलता के लिए विभिन्न स्तरों पर गहन परामर्श के उपरांत एक विस्तृत रोडमैप तैयार किया है। जिसमें शैक्षणिक और प्रशासनिक दोनो दृष्टि से सभी आवश्यक कार्य बिंदु शामिल हैं। एक ओर हमने बाल केन्द्रित शिक्षण पद्धति, शिक्षण सामग्री, शिक्षकों के व्यवसायिक विकास और मूल्यांकन की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया है तो दूसरी ओर हम आईटी सक्षम समर्थन प्रणाली के निर्माण, विभिन्न स्तरों पर प्रासंगिक समितियों के निर्माण और जागरूकता पैदा करने के लिए संचार रणनीतियों का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित कर रहें हैं।

मिशन अंकुर की सफलता प्राप्ती में शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगी। नि:संदेह इस मिशन के अग्रणी मोर्चे पर हमारे शिक्षक साथी होंगे जो शासन, समुदाय और विद्यार्थी के मध्य मुख्य कड़ी होंगे। हमारे मध्यप्रदेश के शिक्षक साथी हर चुनौति को हर परिस्थिति में जीतने का जज़्बा और हौंसला रखते हैं, जैसा कि कोविड के संकट काल में भी मध्यप्रदेश के शैक्षिक कार्यो और उपलब्धियों के रूप में देश दुनिया ने देखा है। इन्हीं अनुभवों के आधार पर मैं पूर्ण भरोसे से कह सकता हूँ कि, "हम होंगे कामयाब"।

शिक्षक साथियों आप भी भरोसा रखें कि, इस मिशन में संपूर्ण विभाग आपके हर कदम पर आपके साथ पूर्ण संवेदनशीलता से खड़ा है। मिशन की सफलता की कामना के साथ मेरी ओर से सभी सहभागियों को अग्रिम रूप से धन्यवाद और बहुत - बहुत शुभ कामनाएं।

धनराजू एस

मिशन अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का

राज्य शिक्षा केन्द्र
मध्यप्रदेश

मिशन अंकुर

एन.इ.पी. 2020 के एफ.एल.एन. के मुख्य बिंदु

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। इसका उद्देश्य हमारे देश की बढ़ती हुई विभिन्न विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इस नीति में शिक्षा संरचना के सभी पहलुओं में संशोधन और सुधारों को प्रस्ताव किया गया है।

यह नीति प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष बल देती है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है, कि शिक्षा को न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करना चाहिए – अपितु 'साक्षरता और संख्या ज्ञान' जैसी मूलभूत योग्यताओं और समालोचनात्मक सोच एवं समस्या समाधान जैसी 'उच्च स्तरीय' संज्ञानात्मक क्षमताओं का भी विकास करना चाहिए।

सत्यमेव जयते
Ministry of Education
Government of India

"शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान में उपलब्धि प्राप्त करना होगी।"

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन स्थापित किया गया है जिससे राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल - NIPUN (National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy) (NIPUN) कहा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुसंशा करती है, कि एफ.एल.एन. मिशन निम्न दिशा में कार्य करेगा -

- बाल-वाटिकाओं की स्थापना तथा 5 से 6 वर्ष के बच्चों हेतु विद्यालय तैयारी का मॉड्यूल तैयार करना (3 माह हेतु)
- एससीईआरटी तथा एनसीईआरटी द्वारा एफ.एल.एन. की पाठ्यचर्या की रूपरेखा को विकसित करना
- ऑनलाइन/मिश्रित पद्धति से शिक्षकों का एफ.एल.एन. के लिए क्षमता विकास करना
- प्रत्येक विद्यालय में सक्रिय पुस्तकालयों की स्थापना करना
- एफ.एल.एन. में राज्य द्वारा प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत प्रगति की निगरानी हेतु एफ.एल.एन. से संबंधित डाटाबेस विकसित करना
- सार्वभौमिक एफ.एल.एन. लक्ष्यों के लिए प्रारम्भ की जाने वाली पहलों में सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना

निपुण भारत

मिशन अंकुर

राष्ट्रीय विकास में मूलभूत कौशलों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, 'आत्म निर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत यह घोषणा की गई, कि एक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन प्रारम्भ किया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके, कि देश का प्रत्येक बच्चा कक्षा 3 के अंत तक, आवश्यक रूप से मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान वर्ष 2026-27 तक, प्राप्त करे। इस उद्देश्य हेतु, मिशन को व्यवस्थित रूप से आगे ले जाने के लिए, एक जीवंत पाठयक्रम की रूपरेखा, आकर्षक शिक्षण सामग्री (ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों), परिभाषित और मापनयोग्य सीखने के प्रतिफल, शिक्षक क्षमता विकास, आकलन तकनीक आदि विकसित किए जाएँ।

- राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के अंतर्गत समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान की राष्ट्रीय पहल को निपुण भारत कहा गया है।
- मिशन 3 से 9 आयु वर्ग तक के 5 करोड़ बच्चों की अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करता है।

निपुण भारत का सपना,
सब बच्चे सीखे भाषा और गणना

निपुण भारत के सैद्धान्तिक आधार

समग्र

समन्वित

समावेशी

आनंददायी

आकर्षक

निपुण भारत मिशन की शुरुआत तत्कालीन शिक्षा मंत्री डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा पाँच जुलाई 2021 को की गई। निपुण यह सुनिश्चित करने की परिकल्पना करता है, कि आवश्यक रूप से देश का प्रत्येक बच्चा कक्षा - 3 के अन्त तक, वर्ष 2026-27 तक, मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान अर्जित कर लेगा। इस अवसर पर एक लघु वृत्त-चित्र, गीत और निपुण भारत के दिशा- निर्देश भी जारी किए गए। यह मिशन जिसे केंद्र प्रवर्तित समग्र शिक्षा अभियान के तत्वावधान में प्रारम्भ किया गया है, स्कूली शिक्षा के आधारभूत वर्षों में बच्चों तक पहुँच व उन्हें विद्यालय में बनाए रखने, शिक्षक क्षमता विकास, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उच्च गुणवत्ता युक्त विविध शैक्षिक सामग्री/संसाधन निर्माण तथा प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम प्रतिफलों को अर्जित करने की प्रगति की निगरानी किए जाने पर केन्द्रित है।

मिशन अंकुर

एफ.एल.एन. कौशल क्या हैं ?

शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य वर्ष 2026-27 तक कक्षा 3 के प्रत्येक बच्चे में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान से संबंधित कौशलों को प्राप्त करना है -

समझ के साथ पढ़ना

लिखना

मूलभूत गणितीय संक्रियाएँ

बुनियादी जीवन कौशलों को सीखना

एफ.एल.एन. क्या है ?

किसी पाठ्य को पढ़ने, समझने तथा भारतीय अंकों के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव करने की योग्यता

साक्षरता - समझ के साथ पढ़ने की योग्यता

- कक्षा स्तर अनुसार समझकर पढ़ना
- आनंद के लिए पढ़ना
- समझ के साथ सुनना और बोलना
- विभिन्न प्रयोजनों के लिए लिखना

संख्या ज्ञान - संख्याओं के अर्थ की समझ

- गणितीय सोच का विकास
- गिनती करने में सक्षम
- समस्याओं को सुलझाने के लिए बुनियादी गणितीय संक्रियाओं का संचालन करने की क्षमता

मूलभूत साक्षरता

मिशन अंकुर

भाषा संबंधित पूर्व ज्ञान, भाषाई एवं साक्षरता कौशल के विकास में सहायता करना है।

मूलभूत साक्षरता और भाषा के प्रमुख घटक -

ध्वनि जागरूकता

इस क्षेत्र में शब्दों और कविताओं की जागरूकता के साथ शब्दों में निहित ध्वनियों की वे दक्षताएँ सम्मिलित हैं, जो भाषा के साथ बच्चों के सार्थक जुड़ाव को दर्शाती हैं।

मौखिक भाषा का विकास

मौखिक भाषा के अनुभव पढ़ने और लिखने के कौशलों के विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

शब्दकोश

इसमें मौखिक शब्द-भण्डार, पढ़ने-लिखने से संबन्धित शब्द-भण्डार तथा शब्दों के संरचनात्मक विश्लेषण से संबन्धित दक्षताएँ सम्मिलित हैं।

डिकोडिंग

इसमें प्रिंट जागरूकता, अक्षर ज्ञान तथा शब्दों की पहचान सम्मिलित हैं।

धारा प्रवाह पठन

किसी लेख को उचित गति, शुद्धता व हावभाव और समझ के साथ पढ़ने की क्षमता, जिससे बच्चे लिखित सामग्री के अर्थ को ग्रहण कर पाएँ, धारा प्रवाह पठन कहलाता है।

पढ़ने की संस्कृति और प्रवृत्ति

इसमें विभिन्न प्रकार की पठन सामग्रियों एवं अन्य पुस्तकों के साथ जुड़ने की प्रेरणा सम्मिलित है।

पढ़कर समझना

इसमें किसी लेख को समझने, उससे जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ पाठ्य की व्याख्या करने की दक्षता सम्मिलित है।

लिखना

इसमें अक्षरों और शब्दों को लिखने के साथ-साथ अभिव्यक्ति के लिए लिखने की दक्षताएँ सम्मिलित हैं।

मिशन अंकुर

बुनियादी संख्या ज्ञान

बुनियादी संख्या ज्ञान का अर्थ है – दैनिक जीवन की घटनाओं/समस्याओं के समाधान में सरल संख्यात्मक तर्क और उसके उपयोग की योग्यता। प्रांरभिक गणित के प्रमुख पहलू और घटक निम्नानुसार हैं -

संख्याएँ

गिनती, लेखन, नाम और विस्तार के माध्यम से एक बच्चे को संख्याओं की मजबूत पहचान बनाने और संख्याओं के रूप और मूल्य को समझने में मदद करता है।

संक्रियाएँ

जोड़, घटाव, गुणा, भाग की संक्रियाओं से बच्चे को संख्याओं के साथ काम करने के प्रमुख तरीके सीखने में मदद मिलती है जिससे उन्हें अपन दैनिक जीवन में सरल और जटिल समस्या को हल करने में मदद मिलती है।

आकृतियाँ

एक बच्चे को स्थानिक समझ निर्माण के लिए स्वयं के बारे में जागरूकता विकसित कर लोगों और वस्तुओं के बीच संबंध बनान में मदद करता है जिसमें आकृति, आकार, स्थान, स्थिति, दिशा, दूरी और गति शामिल होती है।

संख्या अवधारणा

तुलना, अनुक्रम और संख्या छोड़ गिनती के माध्यम से एक बच्चे को संख्याओं के बीच में गुणों और संबंधों को सीखने में मदद करता है।

मापन

लंबाई/दूरी, आयतन/क्षमता, समय जैसे माप जो हमारे जीवन के हर क्षेत्र में प्रचलित हैं, एक बच्चे को विभिन्न संदर्भों में इनस परिचित होन` में मदद करता है।

मुद्रा

एक बच्चे को मुद्रा की समझ और पहचान करने में मदद करता है, और अपन दैनिक जीवन में मुद्रा के संचालन और लेन-देन के बारे में बताता है। इस तरह के कुछ बुनियादी कौशल हर बच्चे को वास्तविक जीवन के लिए सीखने की आवश्यकता होती है।

मिशन अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का

राज्य शिक्षा केन्द्र
मध्यप्रदेश

मिशन अंकुर

वर्तमान वास्तविकताएँ
मध्यप्रदेश की स्थिति

प्रदर्शन स्तर के आधार पर कक्षा 3 के छात्रों का प्रदर्शन (NAS 2021 परिणाम के आधार पर)

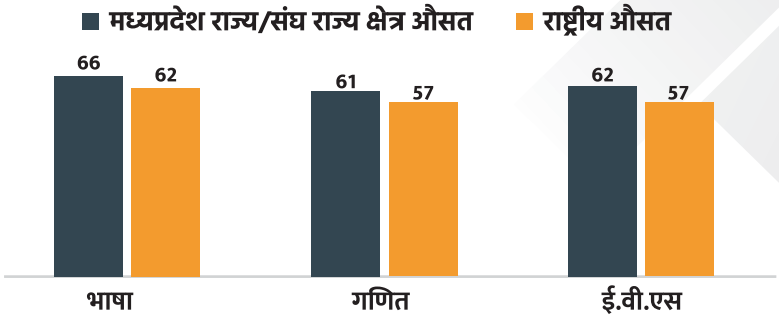

प्रदर्शन स्तर के आधार पर कक्षा 3 के छात्रों का प्रदर्शन (NAS 2021 परिणाम के आधार पर)

	बेसिक से नीचे	बेसिक	कुशल	विकसित
भाषा	23	34	29	13
गणित	17	35	35	13
ई.वी.एस	16	34	37	13

नोट: इस डेटा सेट में दशमलव अंकों को पूर्ण संख्या में पूर्णांकित किया गया है और इसलिए 100 तक नहीं जोड़ा जा सकता है।

डेटा से पता चलता है कि कक्षा 3 में 23 प्रतिशत छात्र भाषा में बुनियादी स्तर से नीचे हैं और कक्षा 3 में 17 प्रतिशत छात्र गणित में बुनियादी स्तर से नीचे हैं। इसका मतलब यह है कि वे अभी भी पाठ्यक्रम मानकों के संबंध में विकास के प्रारंभिक चरण में हैं और उन्हें बहुत अधिक प्रोत्साहन और समर्थन की आवश्यकता है। अधिकांश छात्र बुनियादी स्तर पर हैं और उन्हें सीखने के विभिन्न चरणों में पर्याप्त मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

एफ.एल.एन. महत्वपूर्ण क्यों है ?

1. कक्षा 3 तक बच्चों में **'पढ़ने के लिए सीखना'** अपेक्षित है, यह उन्हें अगली कक्षाओं में वे **'सीखने के लिए पढ़ने'** में सक्षम बनाएगा

2. जो बच्चे मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की दक्षताएँ अर्जित नही कर पाते, उन्हें कालांतर में अन्य शालेय विषय पढ़ने में समस्या आती है, और बाद में उनके **शाला त्यागी** होने की संभावना बढ़ जाती है

3. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान से बच्चों को 21वीं सदी के कौशल जैसे – विवेचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान और सृजनात्मकता के अर्जन में सहायता मिलती है

4. भारत के जनसांख्यिकी लाभांश को भुनाना तभी संभव है, जब बच्चे कक्षा 3 में मूलभूत पठन और गणितीय कौशल अर्जित करें

5. **मानव का 85% मस्तिष्क 6 वर्ष की आयु तक विकसित हो जाता है।** अत: प्रारम्भिक कक्षाओं और मूलभूत अधिगम पर ध्यान केन्द्रित करने से अधिगम स्तर में गिरावट जैसी समस्या का समाधान किया जा सकता है

मिशन अंकुर

लक्ष्य - राज्य में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान कौशलों के लिए सार्वभौमिक और सक्षम वातावरणा बनाना

''मिशन अंकुर : अभियान नींव की मजबूती का''

मिशन अंकुर के लाभार्थी

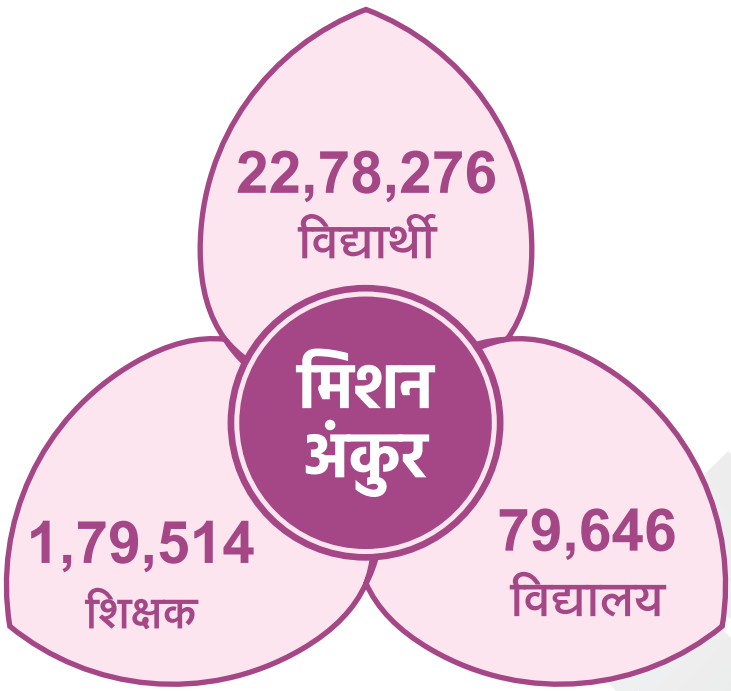

मिशन अंकुर

मिशन अंकुर के लक्ष्य

	साक्षरता	संख्या ज्ञान 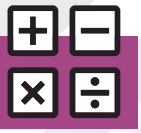
बालवाटिका	• अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानता है • न्यूनतम 2 से 3 अक्षरों से बने सरल शब्द पढ़ता है	• 10 तक के अंकों को पहचानता और पढ़ता है • संख्याओं/वस्तुओं/आकृतियों से संबन्धित किसी घटना को एक अनुक्रम में व्यवस्थित करता है
कक्षा -1	• आयु-अनुरूप अपरिचित पाठ्य सामग्री के न्यूनतम 4 से 5 शब्दों के छोटे वाक्य पढ़ता है	• 99 तक की संख्याएँ पढ़ता और लिखता है • सरल जोड़ और घटाव की संक्रियाएँ कर सकता है
कक्षा - 2	• आयु-अनुरूप अपरिचित पाठ्य सामग्री को 45 से 60 शब्द प्रति मिनिट की दर से अर्थ के साथ पढ़ता है	• 999 तक की संख्याओं को पढ़ता और लिखता है • 99 तक की संख्याओं को घटाता है
कक्षा - 3	• आयु-अनुरूप अपरिचित पाठ्य सामग्री को कम से कम 60 शब्द प्रति मिनिट की दर से पढ़ता है	• 9999 तक की संख्याएँ पढ़ता और लिखता है • गुणा की सरल समस्याओं को हल करता है

मिशन अंकुर

मिशन: 'साक्षरता (हिंदी भाषा) और संख्याज्ञान में कक्षा 1 से 3 के छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार करना'

चरण 1
सत्र 21-22

डिज़ाइन और लॉन्च

प्रोग्राम डिजाइन, बेसलाइन, कार्यक्रम को स्थापित करने पर ध्यान देना

चरण 2
सत्र 22-24

मजबूती और स्थिरता

कार्यक्रम को और बेहतर बनाने के लिए पुनर्बलन करना एवं जमीनी स्तर पर स्थिरता

चरण 3
सत्र 24-27

FLN लक्ष्य केन्द्रित क्रियान्वयन

सुदृढ़ कार्यक्रम मॉनिटरिंग, डेटा संकलन, जवाबदेही और निर्णय लेना

मिशन अंकुर

मिशन अंकुर मिशन मोड से आशय ?

एफ.एल.एन. मिशन अधिकारियों, विद्यालयों, शिक्षकों, पालकों तथा समुदाय जैसे सभी स्तरों पर, स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देकर सफल हो सकता है। इस जुड़ाव को बनाए रखने के लिए, सभी हितधारकों को कक्षा 1 से 3 मे सीखने के प्रतिफलों में सुधार पर केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ, तेजी से लक्ष्य का अनुसरण और समयबद्ध तरीके से एक ही लक्ष्य की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता होगी।

'मिशन अंकुर' को मिशन मोड में क्रियान्वित किया जाएगा। इसका अर्थ है, कि इसके स्पष्ट परिभाषित उद्देश्य, विस्तार, क्रियान्वयन की समय-सीमा, माइल स्टोन्स, मापन योग्य अधिगम प्रतिफल और कार्यक्षेत्र घोषित होंगे। इससे सुनिश्चित किया आएगा कि मध्यप्रदेश राज्य वर्ष 2026 - 27 तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान से संबंधित अपने घोषित लक्ष्य हासिल कर सके।

मध्यप्रदेश के सभी हितधारक वर्ष 2026-27 तक सभी बच्चों के लिए एफ.एल.एन. में सुधार के लिए एक अभियान के तौर पर मिलकर काम करेंगे

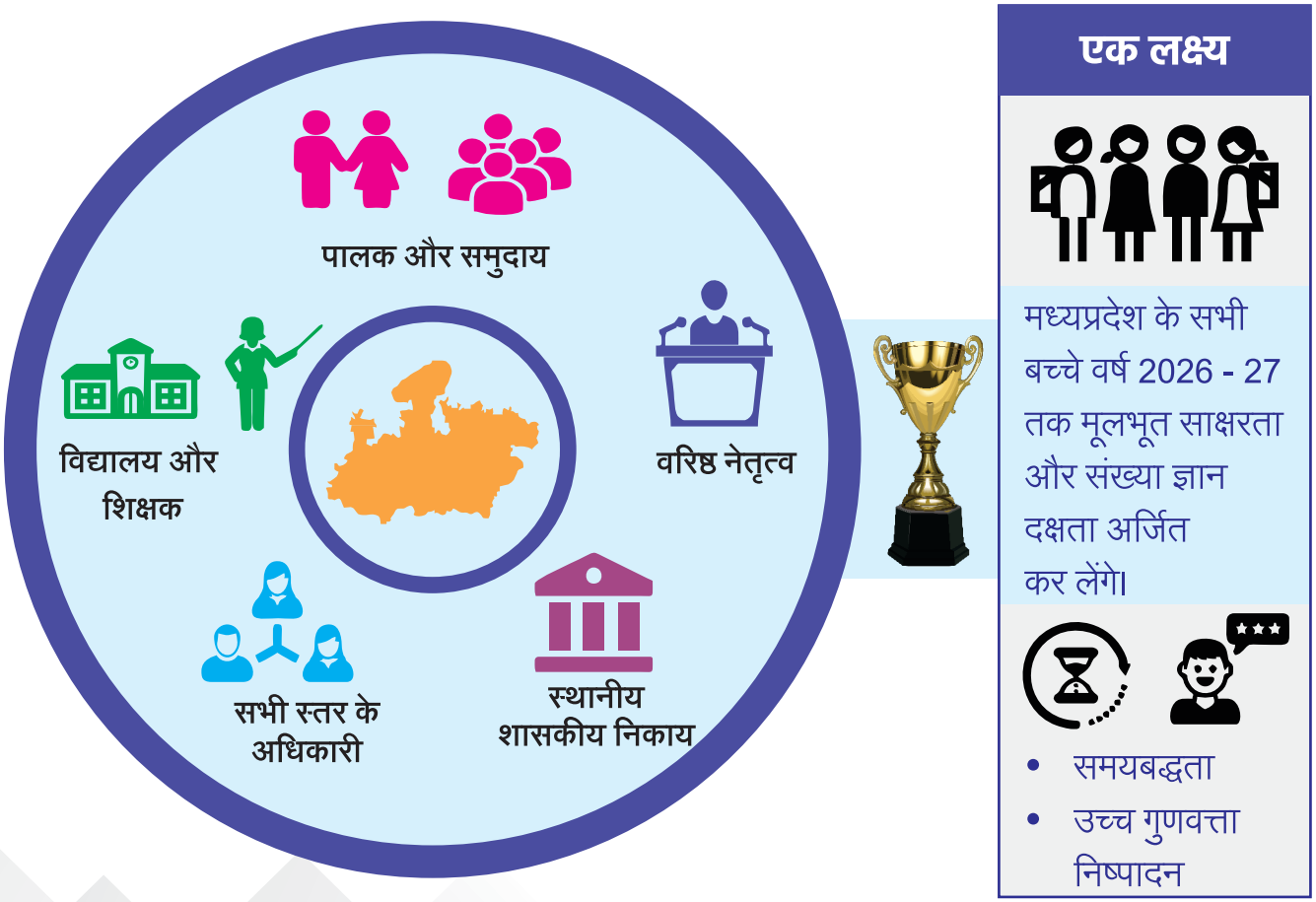

एक लक्ष्य

मध्यप्रदेश के सभी बच्चे वर्ष 2026 - 27 तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान दक्षता अर्जित कर लेंगे।

- समयबद्धता
- उच्च गुणवत्ता निष्पादन

मिशन अंकुर का उद्देश्य है कि एक अभियान के रूप में समयबद्ध तरीके से विभिन्न प्रणालीगत कारकों को मजबूत कर, उच्च गुणवत्ता वाले प्रयासों द्वारा लक्ष्य को प्राप्त करना है।

मिशन

अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का—

रूपरेखा

- शिक्षण-अधिगम और पाठ्यचर्या सामग्री
- शिक्षक प्रशिक्षण
- शिक्षकों को सलाह और मेंटोरिंग
- विद्यार्थी आकलन
- मिशन के लक्ष्यों का निर्धारण
- शासन संरचनाएँ
- मॉनिटरिंग
- सम्प्रेषण और संचार

राज्य शिक्षा केन्द्र
मध्यप्रदेश

मिशन अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का

अकादमिक पहल

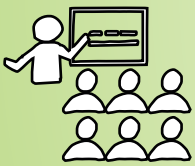

- शिक्षण अधिगम और पाठ्यचर्या सामग्री
- शिक्षक प्रशिक्षण
- शिक्षकों को सलाह और मेंटोरिंग
- विद्यार्थी आकलन

राज्य शिक्षा केन्द्र
मध्यप्रदेश

शिक्षण - अधिगम पाठ्यचर्या और सामग्री

मिशन अंकुर

एफ.एल.एन. मिशन के अन्तर्गत बच्चों के समग्र विकास के लिए बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण का पालन करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। अत: राज्य के लिए प्रासंगिक, दक्षता आधारित अकादमिक सामग्री का विकास और उपयोग किया जाएगा।

विद्यार्थियों, शिक्षकों और पालकों के लिए एक व्यापक पैकेज

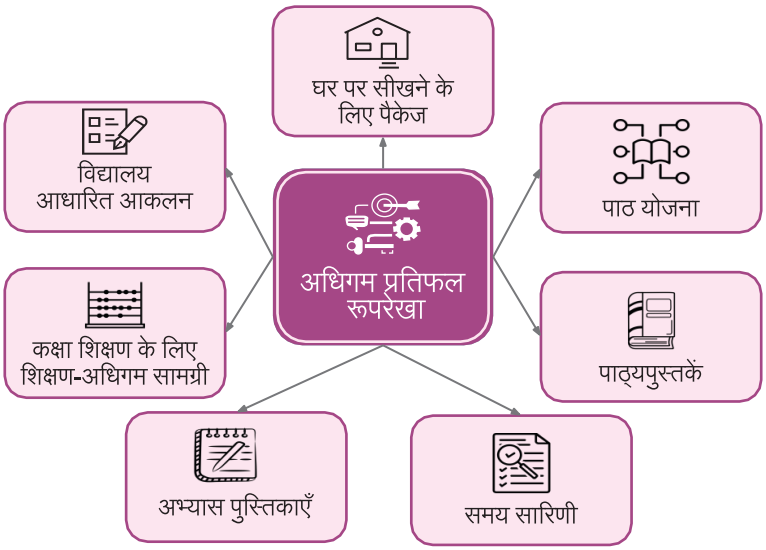

दृष्टिकोण - मुख्य सिद्धान्त

दक्षता आधारित अधिगम	बाल-केन्द्रित	संरचित कक्षा शिक्षण	आकलन आधारित शिक्षण
सभी सामग्री, एलओएफ के अनुसार, आकलन तथा दक्षता पर विशिष्ट ध्यान	स्केफोल्डेड अधिगम, व्यावहारिक / गतिविधि आधारित अधिगम	दैनिक पाठ योजना/साप्ताहिक दिनचर्या और सामग्री जुटाना	कमजोर विद्यार्थियों का चिन्हींकरण और सहायता, समकक्ष विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त अभ्यास
पालकों के साथ जुड़ाव	**उपयुक्त शिक्षण (पेडागोजी)**	**सतत अधिगम सहलग्नता**	**उचित टूल्स की उपलब्धता**
अभ्यास और सुदृढीकरण हेतु बच्चों के सीखने में पालक एक सुविधादाता की भूमिका निभाएंगे	परिचित से अपरिचित, सरल से जटिल और मूर्त से अमूर्त शिक्षण सूक्तियों का उपयोग	कक्षा 3 की विद्यालय-पूर्व शिक्षा से सहलग्नता (आयु वर्ग 3 से 9 तक)	शिक्षकों, पालकों और विद्यार्थियों के लिए डिजिटल सहायता सहित स्थानीय संदर्भित सामग्री

कक्षा में विद्यार्थियों को सीखने में सहायता करने के लिए, शिक्षण-अधिगम सामग्री मुख्य संसाधन है। शिक्षण - अधिगम सामग्री के माध्यम से, शिक्षक अवधारणात्मक शिक्षा को ठोस उदाहरणों से मूर्त से अमूर्त स्तर तक ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

राज्य स्तरीय

अधिगम सामग्री का निर्माण, अधिगम प्रतिफलों की रूपरेखा पर आधारित है। इस बात पर ज़ोर दिया गया है शिक्षक, शिक्षण-अधिगम सामग्री का उपयोग इस प्रकार करें, जिससे विद्यार्थी आसानी से एफ.एल.एन. के कौशल अर्जित कर सकें और संबन्धित दक्षताओं को विकसित कर सकें। राज्य उन संसाधनों की सूची बनाएगा और प्रबंधन करेगा, जिनका उपयोग शिक्षकों द्वारा कक्षा-कक्ष में किया जा सकता है। कक्षा में शिक्षण-अधिगम सामग्री के प्रभावी उपयोग और घर पर अभ्यास के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देने पर ध्यान दिया जाएगा।

जिला स्तरीय

यह महत्वपूर्ण है, कि शिक्षक राज्य स्तर पर निर्मित संसाधनों का उपयोग कक्षा शिक्षण में प्रभावी रूप से करे। एस.आर.जी., डीआरजी और DIETs जिले के शिक्षक प्रशिक्षणों के संचालन, समन्वयन और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है, कि ए.पी.सी. और डी.पी.सी. शिक्षण-अधिगम सामग्री उपयोग के लिए प्रभावी कार्यशैली को विकसित करने में शिक्षकों का मार्गदर्शन करेंगे।

विकासखण्ड और संकुल स्तरीय

बी.ए.सी. तथा सी.ए.सी. शिक्षकों को उपलब्ध कराए जा रहे संसाधनों के प्रभावी उपयोग करने के लिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण, मेंटरिंग, कोचिंग और अध्यापन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। प्रशिक्षणों में इन संसाधनों के उपयोग का प्रदर्शन किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक इन संसाधनों के कक्षा में सही और प्रभावी उपयोग के तरीकों को समझ सकेंगे।

विद्यालय स्तरीय

कक्षा में उपलब्ध संसाधन गतिविधियाँ और खेल के माध्यम से नई अवधारणाओं को प्रस्तुत करने में शिक्षक सहायक होंगे। लर्निंग किट श्यामपट और चॉक से अध्यापन के पूर्व, अवधारणाओं से परिचित कराने में सहायता करते हैं। विद्यार्थियों को समूह गतिविधियों, व्यक्तिगत क्रियाकलापों एवं सहपाठी अधिगम के साथ जोड़ने से, विद्यार्थी नवाचारी अधिगम पद्धतियों का उपयोग कर अपना ज्ञान निर्माण कर सकेंगे। एनईपी 2020 और निपुण भारत के दस्तावेज़ विद्यार्थियों को सीखने और पढ़ने में सहायता करने के लिए “रीडिंग कॉर्नर्स” और पुस्तकालयों के उपयोग को अत्यधिक महत्व देंगे। शिक्षण सहायक सामग्री से समृद्ध कक्षा का वातावरण विद्यार्थियों को अधिगम संसाधनों से परिचित कराने के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार की गतिविधियों से विद्यार्थियों का शब्द भण्डार और साक्षरता कौशल विकसित करना सरल हो जाता है।

शिक्षक प्रशिक्षण

मिशन अंकुर

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का उद्धेश्य एफ.एल.एन. कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों में एफ.एल.एन. अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करना है। विद्यालय की सभी शिक्षण-अधिगम सामग्रियों को प्रभावी ढंग से अनुकूलित करते हुए शिक्षण में उपयोग सुनिश्चित करना है। मिशन के लिए शिक्षकों को मिश्रित कार्यप्रणाली (ऑनलाइन और ऑफलाइन) में प्रशिक्षित किया जाएगा। मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को निम्न प्रकार प्रशिक्षित किया जाएगा -

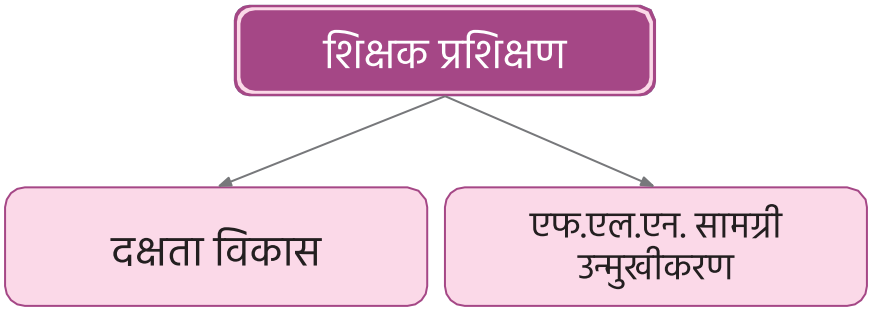

शिक्षक प्रशिक्षण के प्रमुख क्षेत्र

एफ.एल.एन. दक्षताओं पर केन्द्रित

- साक्षरता और संख्याज्ञान के तत्व
- प्रारम्भिक शिक्षा शास्त्र के सिद्धान्त
- आकलन
- एम.जी.एम.एल. (कक्षा 1 व 2 के सन्दर्भ में)

कौशल और अभ्यास पर केन्द्रित

- सिद्धांतों और पद्धतियों का प्रदर्शन
- कक्षा में उपयोग
- विचारशील कार्यशैली

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए की जाने वाली मुख्य गतिविधियाँ

- एफ.एल.एन. के स्रोत व्यक्तियों का (राज्य और जिला स्तर पर) एक सशक्त समूह बनाया जाएगा, जो शिक्षकों को निरन्तर प्रशिक्षण सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- एफ.एल.एन. प्रशिक्षणों का संचालन करना और यह सुनिश्चित करना की सभी शिक्षक इसे पूरा करें। सभी शिक्षकों के लिए, यह प्रशिक्षण एफ.एल.एन. दक्षताओं, शिक्षण-अधिगम सामग्री और आकलन पर केन्द्रित होगा।
- शिक्षकों की आवश्यकता विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों को उनकी विशेष आवश्यकताओं जैसे शिक्षाशास्त्र , विषय पर समझ, शिक्षण-अधिगम सामग्री (समक्ष और ऑनलाइन) आदि पर सहायता हेतु व्यापक योजना का क्रियान्वयन किया जाएगा।
- शिक्षकों को प्रोत्साहित करने हेतु एफ.एल.एन. शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग और शिक्षाशास्त्र पर ऑनलाइन व ऑफलाइन सामग्री तैयार की जाएगी।

शिक्षक प्रशिक्षण इस बात को सुनिश्चित करने पर केंद्रित होगा कि शिक्षक अपनी कक्षाओं और समुदाय में नेतृत्व प्रदान करें। निपुण दस्तावेज के अनुसार, "शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता शिक्षकों की गुणवत्ता से अधिक नही हो सकती"

राज्य स्तरीय

राज्य शिक्षा केंद्र शिक्षकों में सीखने और उनके व्यावसायिक कौशलों को विकसित करने के लिए कई दिशाओं में कार्य करेगा। शिक्षकों को कक्षा के अंदर और बाहर के उनके दायित्वों के लिए प्रशिक्षित और निर्देशित किया जाएगा। प्रशिक्षण का डिजाइन, शिक्षकों के शिक्षाशास्त्रीय तकनीक में कौशल विकास, अवधारणात्मक स्पष्टता और व्यावहारिक क्रियाकलापों पर केन्द्रित होगा। ये प्रशिक्षण मिश्रित अर्थात ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों पद्धतियों से होंगे। ऐसे मिश्रित प्रशिक्षण – शिक्षाशास्त्रीय क्रियाकलापों और व्यवहारिकता के मॉडल्स, अवधारणात्मक स्पष्टता, सहायक समूहों तक पहुँच और विशेषज्ञों से सीखने पर केन्द्रित होगा।

जिला स्तरीय / विकासखण्ड और संकुल स्तरीय

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIETs) यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, कि शिक्षक प्रशिक्षणों में शिक्षकों द्वारा सीखी गई नई कार्यविधियों का वे कक्षा शिक्षण में प्रभावी उपयोग करें। डाइट्स, बीएसी और सीएसी के साथ प्रशिक्षणों का आयोजन, शिक्षकों की अकादमिक सहायता और उनके विकास की मॉनिटरिंग करेंगे। प्रत्यक्ष रूप में लिए गए प्रशिक्षणों के अतिरिक्त शिक्षक 'दीक्षा' पर भी ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। यह महत्वपूर्ण है, कि डाइट संकाय, बीएसी और सीएसी ऑनलाइन प्रशिक्षणों के अधिग्रहण की भी निगरानी करें।

विद्यालय स्तरीय

शिक्षकों को प्रत्यक्ष रूप में लिए गए प्रशिक्षणों के अतिरिक्त ऑनलाइन पद्धति से प्रशिक्षण प्रदाय किया जाएगा। प्रत्यक्ष रूप से प्रशिक्षण से शिक्षाशास्त्रीय क्रियाकलापों और व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिलेगी, वहीं दूसरी ओर ऑनलाइन प्रशिक्षण विषयवस्तु में विशेषज्ञता अर्जित करने में सहायक होंगे।

शिक्षक कक्षा, विद्यालय और समुदाय को स्वतंत्र रूप से नेतृत्व दें सकें, इसके लिए विभिन्न क्रियाकलापों को प्रांरभ करना सुनिश्चित किया जाएगा। मिशन के अन्तर्गत शिक्षा में बदलाव लाने के लिए, राज्य द्वारा शिक्षकों को चेम्पियन्स के रूप में देखता है।

शिक्षक मेंटरिंग एवं सहयोग

मिशन अंकुर

शिक्षक मेंटरिंग और सहयोग का उद्धेश्य, विकासखण्ड और संकुल स्तर पर शिक्षकों को अपनी कक्षा प्रक्रियाओं में सुधार करने के लिए सहायता करना है। इसके उद्धेश्य हैं -

- मेंटर्स का चिह्नांकन (बी.ए.सी., सी.ए.सी. और डाइट् द्वारा) करना।
- मेंटर्स के लिए - एफ.एल.एन. अवधारणाओं, शिक्षाशास्त्रीय कौशल, कक्षा अवलोकन, स्पॉट आकलन, शिक्षकों का फीडबैक आदि में क्षमता विकास कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- शिक्षकों को कार्यस्थल पर और प्रशिक्षणों में सहायता करना।

शिक्षकों को दी जा सकने वाली अकादमिक सहायता की प्रकृति

कक्षा अवलोकन और मॉनिटरिंग

इसमें शिक्षक को कक्षा में दिए जा रहे पाठ में सुधार करने की दृष्टि से, रचनात्मक फीडबैक देने हेतु कक्षा अवलोकन शामिल है

कोचिंग और मेंटरिंग

इसमें कक्षा शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए, शिक्षकों को व्यक्तिगत, गहन और निरंतर बनी रहने वाली संदर्भ विशिष्ट सहायता प्रदान करना शामिल है

सहकर्मियों द्वारा परस्पर अधिगम

इसमें शिक्षकों के मध्य सहायता और सहयोग को बढ़ावा देने, उन्हें चुनौतियों पर चर्चा करने, विशिष्ट क्रियाकलापों को साझा करने और शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए एक मंच प्रदान करना शामिल है

मेंटर्स के विकासात्मक पहलुओं पर किए गए कार्य उन्हें निम्न बिन्दुओं पर सक्षम बनाएँगे-

- मेंटर्स कक्षा (एफ.एल.एन.) अवलोकन में फीडबैक के माध्यम से शिक्षकों को सहायता करने और सुगमकर्ता सहकर्मियों के बीच परस्पर चर्चाओं को प्राथमिकता देंगे।
- शिक्षकों को अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार के लिए, मेंटर्स मिशन और मिशन के अतिरिक्त भी सतत रूप से मार्गदर्शन करते रहेंगे।
- सभी मेंटर्स अपने संबंधित संकुल/विकासखण्ड में सलाह और परामर्श का कार्य प्रारम्भ करेंगे।
- शिक्षकों को सशक्त सहायता के लिए उचित सामग्रियों और टूल्स का उपयोग करेंगे (अवलोकन प्रोटोकॉल, एप आधारित निरीक्षण प्रणाली आदि)

शिक्षक मेंटरिंग एवं सहयोग

यह आवश्यक है की हमारे शिक्षक मिशन के चेम्पियन बनें। इसके लिए सम्पूर्ण शासकीय प्रणाली को शिक्षकों को सशक्त बनाने, सहायता और सहयोग करने हेतु अनिवार्य रूप से पहल करना होगा ताकि शिक्षक हमारे बच्चों को अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग दे।

राज्य स्तरीय

विद्यार्थियों के अकादमिक विकास के लिए, कक्षा में शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अन्तर्क्रिया होना आवश्यक है। इस अन्तर्क्रिया को अधिकतम और सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को मार्गदर्शन, मॉनिटरिंग एवं अनुशिक्षण में सहयोग के रूप में दिया जाना आवश्यक होगा। राज्य शिक्षा केंद्र, डाइट्, बी.ए.सी. तथा सी.ए.सी. को प्रशिक्षित करेगा जो कि शिक्षकों को प्रभावी शैक्षिक प्रक्रियाओं में सहायता और प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए टूल्स और प्रोटोकॉल तैयार हेतु कार्य करेंगे।

जिला स्तरीय

बी.ए.सी. और सी.ए.सी. को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाएगा, कि उनके पास विषय और शैक्षणिक प्रथाओं की विशेषज्ञता हो जाए। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण आयोजित करने के साथ-साथ, उन्हें शिक्षकों का मेंटोर और कोच बनने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। राज्य शिक्षा केंद्र मेन्टोर्स मॉनिटरिंग करने और शिक्षकों को कुशलतापूर्वक सहायता करने के लिए, सूचना प्रौद्योगिकी टूल्स के विकास का कार्य करेगा। मेंटोर्स क्लस्टर स्तर के परस्पर अधिगम की क्रियाविधि में सहायता करेंगे।

विकासखंड और क्लस्टर स्तरीय

मेन्टोर्स विद्यालयों का भ्रमण करेंगे और शिक्षकों को सहायता और आवश्यक मार्गदर्शन देंगे। वे कक्षाओं का अवलोकन करेंगे और कक्षाओं में क्रियान्वित की जा रही प्रथाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। ये अवलोकन और टीप शिक्षकों के लिए आवश्यक सहायता पर निर्णय लेने के लिए उपयोगी होगी। मेन्टोर्स कक्षा में शिक्षण सहायता प्रदान करेंगे, उत्तम शैक्षिक प्रथाओं का प्रदर्शन करेंगे, कक्षा अवलोकनों और प्रथाओं पर चर्चा करेंगे और शिक्षकों को आवश्यक स्रोत उपलब्ध कराते हुए उनका कौशल बढ़ाने में सहायता करेंगे।

विद्यालय स्तरीय

डी.पी.सी. और ए.पी.सी. यह सुनिश्चित करेंगे, कि विद्यालय भ्रमण के समय मेन्टोर्स द्वारा शिक्षकों को शिक्षण पद्धतियों का अनुपालन और प्रदाय सुझाव का क्रियान्वयन प्रभावी रूप से किया जा रहा है। मेन्टोरिंग की सुविधा के लिए तकनीकी उपकरण प्रदान किए जाएँगे।

सीखने संबंधी आकलन

मिशन अंकुर

राज्य शिक्षा केंद्र ने 'निपुण' के लक्ष्यों की सतत निगरानी करने, सामग्री, शिक्षण एवं प्रणाली में सुधार, विद्यार्थियों के अधिगम को बेहतर बनाने और शिक्षकों को मार्गदर्शन देने की दृष्टि से एक सशक्त एफ.एल.एन. आकलन के प्रारूप की कल्पना की गई है। विद्यार्थियों के आकलन के लिए निम्न कार्य किए जाएँगे -

	चरण - सफल	प्रणाली एसएएस	स्पॉट टेस्टिंग	कक्षा स्तरीय आकलन
आकलन का प्रकार	राज्य स्तरीय केंद्रीकृत आकलन	राज्य स्तरीय केंद्रीकृत आकलन	कक्षा अवलोकन के पश्चात भ्रमण के दौरान मॉनिटर करना	-बेसलाइन (BL) -रचनात्मक (FT)- समग्र (ST)
उद्देश्य	लक्षित अकादमिक सहायता प्रदान करना	शिक्षा नीति और योजना को सूचित करना	प्रगति की मॉनिटरिंग करना	कक्षा शिक्षण में मदद करना
सम्पूर्ण/ नमूना	सम्पूर्ण - सभी विद्यालय 2 के बच्चों के साथ एवं कक्षा - 3, 5, 8 के बच्चे	नमूना – चयनित विद्यालय, सभी विद्यार्थी	नमूना– (निरीक्षण पश्चात प्रत्येक कक्षा के 5 विद्यार्थी)	सम्पूर्ण – सभी कक्षाएँ, सभी विद्यार्थी
आवृत्ति	वार्षिक - वर्ष के अंत में	वार्षिक	मासिक / मेंटर का भ्रमण	FT – साप्ताहिक / पाक्षिक ST- अर्ध वार्षिक

राज्य स्तरीय

प्रदेश में विद्यार्थियों के सीखने के लक्ष्यों में प्रगति की स्थिति जानना बेहद आवश्यक है। इसके लिए राज्य शिक्षा केंद्र, वार्षिक रुप विद्यार्थियों का आकलन के साथ-साथ 'सिस्टम डायग्नोस्टिक' का संचालन करेगा। 'सम्पूर्ण' (सेन्सस) डेटा जहाँ राज्य के सभी विद्यार्थियों की जानकारी देगा, वहीं नियमित प्रगति के मापन के लिए चयनित विद्यालयों के सभी विद्यार्थियों पर एस.ए.एस आकलन किए जाएँगे। इस प्रकार एकत्र किया गया डेटा, राज्य के लिए भावी अकादमिक रणनीतियों को डिजाइन करने के लिए उपयोगी होगा।

जिला स्तरीय

राज्य के द्वारा किए जाने वाले आकलनों के संचालन, समन्वय और निगरानी में जिले का नेतृत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आकलन से प्राप्त किए गए डेटा का उपयोग, जिला नेतृत्व द्वारा जिले के लिए पुनःरणनीति बनाने और हस्तक्षेपी-रणनीतियों की योजना बनाने के लिए किया जाएगा।

विकासखंड और संकुल स्तरीय

बीएसी और सीएसी विद्यालय स्तरीय और रचनात्मक आकलन के संचालन में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। यह भी महत्वपूर्ण होगा की शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की प्रगति का विश्लेषण और तदनुसार अपनी कक्षाओं के लिए प्रासंगिक योजना के निर्माण में सहायता की जाए।

विद्यालय स्तरीय

अपने विद्यार्थियों की दक्षताओं में विकास के आकलन और विश्लेषण के लिए, शिक्षक विद्यालय-आधारित रचनात्मक और समग्र आकलन करेंगे। विद्यालय-आधारित आकलन मुख्य रूप से शिक्षकों को यह जानने के लिए लक्षित हैं, कि विद्यार्थी कक्षा में किस स्तर पर है , जिससे उसके अनुसार वे कक्षा में अपनी अकादमिक योजना बना सकें।

मिशन अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का

प्रशासकीय पहलू...

- मिशन का लक्ष्य निर्धारण
- संचार
- मॉनिटरिंग
- शासन संरचना

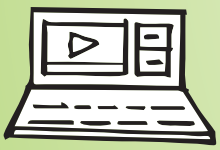

राज्य शिक्षा केन्द्र
मध्यप्रदेश

मिशन के लक्ष्य : प्रदेश व जिलों के लिए लक्ष्य एवं अपेक्षित परिणाम

मिशन अंकुर

राज्य और विभिन्न स्तरों पर एफ.एल.एन. के प्रयासों को दिशा देने में लक्ष्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मिशन की प्रगति की निगरानी और मिशन में समय पर फेरबदल करने में भी सहायक होते हैं।

लक्ष्य निर्धारण के उद्धेश्य

विद्यालय, विद्यालय प्रमुख और शिक्षकों को, अर्जित किए जाने वाले सीखने संबंधी प्रतिफलों के बारे में स्पष्टता हो

सभी स्तरों के हितधारकों को, प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की जाने वाली अपेक्षित दक्षता की स्पष्टता हो

बच्चों की प्रगति के स्तर मापन तथा अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को चिन्हित करने हेतु, एक निश्चित अंतराल में फीडबैक देना

विभिन्न स्तरों पर सुधार के बारे में सार्वजनिक रूप से संवाद करना

मिशन अंकुर के लक्ष्यों का निर्धारण और उनको प्राप्त करने की प्रक्रिया

- राज्य स्तरीय बेसलाइन / मिडलाइन एवं एंडलाइन का आयोजन
- राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा जिले-वार लक्ष्यों का निर्धारण
- मॉनिटरिंग प्रणाली द्वारा प्रगति की निगरानी
- प्रगति के आधार पर अधिगम संवर्धन के लिए योजना

राज्य और विभिन्न स्तरों पर एफ.एल.एन. के लिए किए जा रहे प्रयासों को दिशा देने में 'लक्ष्य' महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मिशन की प्रगति की मॉनिटरिंग और सही समय पर फेरबदल करने में भी सहायक होते हैं।

राज्य स्तरीय

एक समान लक्ष्य पूरी प्रणाली को एक दिशा देने और उसी दिशा में कार्य करने के लिए प्रवृत्त करता है। राज्य शिक्षा केंन्द्र, मिशन के लक्ष्यों को संप्रेषित करने और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा। यह मिशन के लिए समान भाषा विकसित करने में मददगार होगा। राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा लक्ष्यों के सापेक्ष प्रणाली के प्रगति की मॉनिटरिंग, विद्यार्थियों का आकलन, मॉनिटरिंग और मूल्यांकन, टूल्स के माध्यम से किया जाएगा। राज्य प्रत्येक जिले के लिए लक्ष्य निर्धारित करेगा और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, जिलों को आवश्कतानुसार अनुकूल विशिष्ट सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

जिला स्तरीय

राज्य द्वारा साझा किए गए लक्ष्यों के अनुरूप, जिला नेतृत्व और संसाधन समूहों को लघु और दीर्घ अवधि के लक्ष्यों की स्पष्टता होनी चाहिए। जिला स्तरीय नेतृत्व को विभिन्न समीक्षा बैठकों के माध्यम से मिशन की प्रगति पर निगरानी रखनी चाहिए और संदर्भित लक्ष्यों को प्राप्त करने की रणनीति बनाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है, की जिला स्तरीय नेतृत्व इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करने हेतु, जिले की अन्य संस्थाओं को भी प्रेरित करें।

विकासखण्ड तथा संकुल स्तरीय

बी.ई.ओ., बी.ए.सी. और सी.ए.सी. मिलकर मिशन के लक्ष्यों के बारे में समुदाय के स्वयंसेवकों, एसएमसी और शिक्षकों को जागरूक करेंगे। मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु इन्हें विद्यार्थियों की अधिगम दक्षताओं प्रगति और प्रक्रियाओं को सक्षम बनाने में शिक्षकों के सहायता करनी होगी।

विद्यालय स्तरीय

विद्यालय ही मिशन के लिए वास्तविक कार्य-स्थल हैं। विद्यार्थियों, शिक्षकों, पालकों, प्रधान-अध्यापकों, स्वयंसेवकों, समुदाय के नेताओं के साथ कार्य करने वाले सभी हितधारकों को, विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों की जानकारी होना चाहिए। इससे लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में विद्यार्थियों के साथ की जाने वाली गतिविधियों के संचालन में सहायता मिलेगी। इससे समय पर रणनीतियों में फेरबदल व राज्य भर में सफल कार्यनीतियों के विस्तार में मदद मिलेगी।

संप्रेषण और संचार

मिशन अंकुर

संचार और संवाद, हितधारकों को उन्मुख करने, व्यवहार में परिवर्तन लाने, उत्तम क्रियाविधियों को साझा करने, सहक्रियाओं को सक्षम करने तथा मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में सभी को एकजूट करने का प्रमुख साधन हैं। अतः एफ.एल.एन. लक्ष्यों की प्राप्ति जागरूकता जानकारी और सभी को प्रोत्साहित करने, हितधारकों की भूमिकाओं और दायित्वों को साझा करने और अन्य कार्यक्षेत्रों में मिशन की पहुँच बनाने हेतु एक सशक्त संचार योजना बनाई जाएगी।

पालक जिनके बच्चे एफ.एल.एन. कक्षाओं में हैं

जैसे - एफ.एल.एन. लक्ष्य, घर पर सीखने और प्रगति पर शिक्षक-पालक संघों की नियमित बैठक

राज्य शिक्षा केंद्र/डाइट्स पंचायत राज, बीबीआरपी (जिला मजिस्ट्रेट, जिला, शिक्षा अधिकारी, बीईओ)

जैसे – कलेक्टर के नेतृत्व में जागरूकता पहल

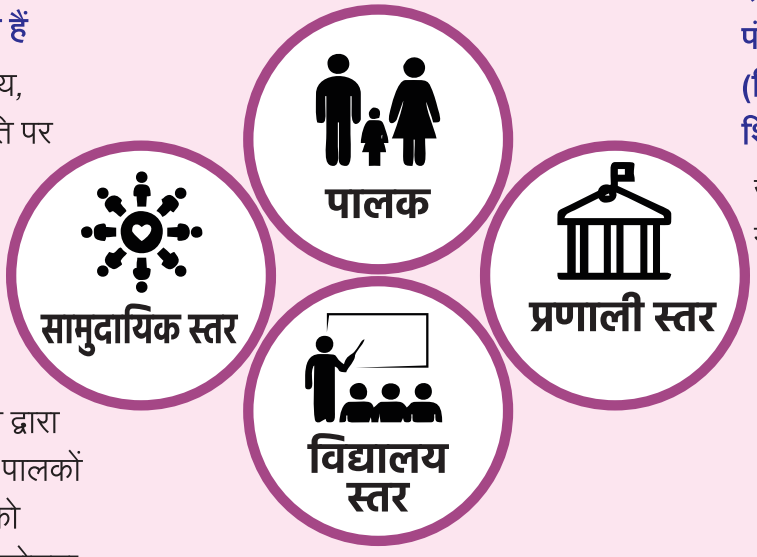

समुदाय

जैसे – ग्रामीण चेम्पियन्स द्वारा एफ.एल.एन. कक्षाओं के पालकों और एसएमसी सदस्यों को जागरूकता अभियान से जोड़ना

विद्यार्थी, शिक्षक, पैरा शिक्षक, एसएमसी सदस्य

जैसे - एसएमसी के नेतृत्व में जनसंचार अभियान

प्रिंट मीडिया

- मिशन अंकुर पर प्रिंट और रेडियो पर विज्ञापन, एफ.एल.एन. का महत्व
- सामुदायिक रेडियो स्टेशन्स, दीवाल होर्डिंग्स, ट्रांज़िट मीडिया

दृश्य-श्रव्य स्रोत

- मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, सभी शिक्षकों और पालकों को डाइट्स के माध्यम से व्हाट्सएप पर पोस्टर/वीडियो क्लिपिंग के माध्यम से संदेश साझा करना
- एफ.एल.एन. उत्कृष्ट कार्यप्रणालियाँ को जिला / विकासखण्ड / संकुल स्तर साझा करना

सोशल मीडिया

- स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों, शिक्षकों और प्रधान अध्यापकों द्वारा व्हाट्सएप फेसबुक, ट्विटर पर मिशन के लक्ष्यों का प्रचार
- हैशटैग ट्रेंड्स #निपुण भारत #मिशन अंकुर (जिला विशिष्ट)
- एफ.एल.एन. माह: राज्य/ जिला/ विकासखण्ड स्तरीय कार्यक्रम, समुदाय स्तरीय पठन अभियान और प्रतियोगिताएँ आयोजित करना

मिशन अंकुर

सम्प्रेषण और संचार

मिशन अंकुर कार्यक्रम को शासन अभियान के रूप में क्रियान्वित करना चाहता है। अभियान के रूप में संचालन हेतु यह महत्वपूर्ण है, कि विद्यार्थियों एवं सहायक संस्थानों के साथ कार्यरत सभी हितधारक समान लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में जागरूक और एक दूसरे के साथ समन्वित में रहें।

राज्य स्तरीय

राज्य शिक्षा केंद्र मिशन के लिए एक आम शब्दावली को डिजाइन करेगा – वह प्रणाली में प्रभावी संचार में सहायता करेगा और संचार में हितधारकों के लिए, प्रणाली को समर्पित संचार, उन्मुखीकरण और एक दूसरे के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया जाएगा। राज्य शिक्षा केंद्र, कई संचार सम्पार्श्विक (कोलेटरल्स) विकसित करेगा – इसे टेलीविज़न, रेडियो, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया आदि के साथ साझा किया जाएगा। इससे यह सुनिश्चित हो सकेगा, की पूरी प्रणाली मिशन में होने वाली विभिन्न गतिविधियों और नवाचारों से अवगत है।

जिला स्तरीय

जिले का नेतृत्व राज्य में मिशन को एक साथ लाने, व्यवस्थित करने और अंगीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिले का एक महत्त्वपूर्ण कार्य अभियान के लिए प्रमुख चैंपियन को चिह्नित व प्रोत्साहित कर उनके द्वारा जनमानस तक मिशन की पहुँच बनाना है। इस मिशन के लिए जिले को चैंपियन के साथ-साथ, एक साझा दृष्टि और दिशा लाने के लिए पालकों, शिक्षकों और समुदायों के साथ काम करने वाले प्रमुख संस्थानों का संरेखण और उपयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जिला विभिन्न जानकारियों का राज्य स्तर पर प्रेषण, क्षेत्र से जानकारियों का संकलन, शिक्षकों के अभियानों का संचालन, बदलाव के मॉडल्स का विकास जैसे महत्वपूर्ण कार्य करते हुए राज्य स्तर पर जिले की सफलताओं को भी साझा करेगा।

विकासखण्ड और संकुल स्तरीय

विकासखण्ड अधिकारी इस मिशन के लिए पंचायत समितियों, एस.एम.सी., स्थानीय एन.जी.ओ., और अपने क्षेत्र में काम करने वाले स्वयंसेवकों जैसी स्थानीय संस्थाओं को कार्यप्रवृत्त करेंगे। उन्हें सामुदायिक अभियानों को चलाने और मिशन के लिए स्थानीय चैंपियन जुटाने में शिक्षकों की सहायता करने की आवश्यकता होगी।

विद्यालय स्तरीय

इस मिशन के लिए शिक्षक, एस.एम.सी., स्वयंसेवक और समुदाय के चैंपियन समुदाय को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। वे ऐसे जागरूकता अभियान और विकास कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके, कि सभी पालकों को यह ज्ञात हो सके की उनके बच्चों के शैक्षिक लक्ष्य क्या हैं, और यह कैसे पता लगाएँ की बच्चे अपने लक्ष्यों तक पहुँचने की ओर अग्रसर हैं या नही ? मिशन से संबंधित सभी क्रियाकलाप शिक्षकों, विद्यार्थियों, पालकों और समुदाय के आसपास ही होंगे। ये सभी मिलकर जागरूकता अभियानों साथ-साथ समुदाय तक पहुँच हेतु ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करेंगे जिससे सुनिश्चित किया जा सके कि सभी पालक अपने बच्चों के शैक्षिक लक्ष्यों को जान पाएँ और पता लगा सकें कि वे लक्ष्यों तक पहुँचने की ओर अग्रसर हैं या नहीं? विद्यालयों, समुदायों, चैंपियन, पालकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की गूंज बच्चों के लिए योजित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रणाली को सही दिशा में बनाए रखेगी।

मिशन अंकुर

मिशन की गतिविधियों की मॉनिटरिंग सूचना प्रौद्योगिकी आधारित समाधानों के द्वारा की जाएगी इसमें क्षेत्रीय मॉनिटरिंग भी सम्मिलित है जिससे कि डेटा आधारित निर्णय लिए जा सकें।

एफ.एल.एन. की सफलता मापने के प्रमुख प्रदर्शन संकेतक

योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की दृष्टि से मिशन अंकुर की प्रत्येक पहल के लिए, प्रभावी और मापन योग्य प्रमुख संकेतकों का विकास किया जाएगा।

डेटा संकलन और अनुमान लगाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी/डिजिटल प्रणालियाँ

मिशन अंकुर के मापन की रूपरेखा और संरचना इस प्रकार होगी, कि समय-समय पर विभिन्न स्तरों और स्रोतों से डेटा का स्वचालित संकलन और एकीकरण एक मजबूत प्रौद्योगिकी के माध्यम से हो सके।

डेटा के स्रोत

1. विद्यालय स्तरीय आकलन
2. वृहद स्तर पर आकलन – एनएएस, एसएएस
3. विद्यालय निरीक्षण का मेंटोरींग डेटा
4. क्षेत्रीय भ्रमण का मॉनिटरिंग डेटा
5. प्रशासकीय अनुपालन के लिए मॉनिटरिंग डेटा

डेटा प्रणाली में निम्न को सम्मिलित किया जाएगा-

- विद्यालयों से डेटा प्राप्त करने के सरल और स्वचलित डिजिटल तरीके
- राज्य/राष्ट्रीय प्रणालियों के लिए डेटा का अपलोड
- कार्रवाई योग्य मेट्रिक्स का विकास तथा विश्लेषण प्रणाली द्वारा उसका प्रदर्शन
- शैक्षिक पदानुक्रम में सभी हितधारकों को स्वचलित माध्यम से विश्लेषणात्मक विवरण भेजना ताकि समय पर कार्यवाई की जा सके।

समीक्षा बैठकें

मॉनिटरिंग प्रणाली में व्यापक समीक्षा बैठकों का एक मॉडल बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। यह जिला, विकासखण्ड, और क्लस्टर सहित विभिन्न स्तरों पर एकत्रित आंकड़ों के उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इससे डेटा का आदान-प्रदान भी सुनिश्चित हो सकेगा और सभी स्तरों पर प्रशासकों के लिए डेटा तक पहुँच सुनिश्चित होगी।

प्रशासकीय पहल–मॉनिटरिंग

मिशन अंकुर को मिशन मोड में संचालित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है, कि हम सर्वोत्तम क्रियाविधियों की पहचान करें और इन क्रियाविधियों को पूरे राज्य में क्रियान्वयन करने की दृष्टि से उन्हें अंगीकृत करने के लिए संहिताबद्ध करें। उसी प्रकार यह महत्वपूर्ण है, कि हम प्रांरभिक चुनौतियों का सामना करें, जिससे कि मिशन के क्रियान्वयन को सही समय पर उचित दिशा दी जा सके।।

राज्य स्तरीय

राज्य शिक्षा केंद्र, मानकों और उपायों को निर्धारित करने की दिशा में कार्य करेगा, जो राज्य भर में कार्यक्रमों के लिए वर्तमान वास्तविकताओं, चुनौतियों और सर्वोत्तम क्रियाविधियों को समझने में मदद करेगा। पूरे तंत्र में डेटा संग्रह, विश्लेषण और डेटा की उपलब्धता में सहायता करने के लिए आईटी संसाधनों का उपयोग किया जाएगा। इससे निर्णय लेने की निपुणता में सुधार हो सकेगा और कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। समर्पित भूमिकाओं और दायित्वों को इन आईटी संसाधनों के आसपास डिजाइन किया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके, कि प्रत्येक अधिकारी अपने उत्तरदावित्वों के बारे में जानता है और इसके लिए प्रशिक्षित है।

जिला स्तरीय

मिशन की मॉनिटरिंग संबंधित पहलों को क्रियान्वित करने के लिए डाइट, डीपीसी तथा एपीसी प्रमुख माध्यम हैं। इसके लिए यह आवश्यक है, कि जिले का यह नेतृत्व आपस में सहयोगात्मक रूप में तालमेल रखे, और उनके द्वारा संपन्न किए जाने वाले कार्यों की स्पष्ट समझ रखें। आईटी संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए, क्षमता संवर्धन कार्यशालाओं का संचालन किया जाएगा। उल्लेखनीय है, की एक समर्पित टीम सतत रूप से जमीनी स्तर पर प्राप्त होने वाली सफलताओं और उनकी रणनीतियों के आधार पर एक अंतर्दृष्टि रखते हुए, मिशन के आगामी कार्यों के लिए मार्गदर्शी निर्णय लेगें। जिला और विकास खण्ड स्तर पर मासिक समीक्षा बैठकों का आयोजन होगा। कार्यक्रम को सशक्त बनाने के परिप्रेक्ष्य में, इन बैठकों में क्रियान्वयन में की गई पहलों और परिणामों प्रभावों की समीक्षा के लिए, आईटी साधनों से प्राप्त डेटा के विश्लेषण का उपयोग किया जाएगा।

विकासखण्ड तथा संकुल स्तरीय

विकासखण्ड स्तर पर आयोजित की जाने वाली बैठकों में बी.ई.ओ., बी.आर.सी., बीएसी तथा सीएसी को सक्रिय सहभागिता करेंगे। स्थानीय स्तर पर प्रभावी निर्णय लेने में सहायता के लिए, समीक्षा बैठकों में जमीनी स्तर की सफलताओं और चुनौतियों पर चर्चा की जाएगी। इसके अतिरिक्त बीएसी तथा सीएसी मेन्टोरिंग कार्यक्रम में नेतृत्व कर सकते हैं।

विद्यालय स्तरीय

शिक्षक, विद्यार्थी और पालक मिशन की वास्तविकताओं को जानने के स्रोत हैं। कार्यक्रमों की बारीकियों को समझने के लिए मॉनिटरिंग प्रणालियों को इस प्रकार से डिजाइन किया जाएगा, कि जिससे संबंधित हितधारकों से डेटा को संकलित किया जा सके। उनकी भागीदारी और अनुभव पूरी प्रणाली से मिशन के उद्धेश्यों को जमीन से जोड़े रखेंगे, जिससे राज्य में मिशन के सफलता पूर्वक क्रियान्वयन के लिए सही निर्णय लिए जा सकें।

मिशन के क्रियान्वयन के लिए पाँच स्तरीय (राज्य – जिला – विकासखंड – संकुल– विद्यालय) क्रियान्वयन तंत्र की स्थापना की जाएगी

राज्य स्तरीय प्रोजेक्ट मेनेजमेंट यूनिट
इसमें संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र, विषय विशेषज्ञ, कार्यकारी समूह, तकनीकी और प्रोजेक्ट मेनेजमेंट विशेषज्ञ होंगे

1. पाँच प्रमुख क्षेत्रों में योजना बनाने तथा उसकी मॉनिटरिंग और सुधार हेतु
- पाठ्यचर्या
- शिक्षक प्रशिक्षण और मेन्टोरिंग
- विद्यार्थी आकलन मॉनिटरिंग प्रणाली और शासन तंत्र
- संचार

विकासखण्ड और संकुल स्तरीय
इसमें बीईओ, बीआरसी, बीएसी और सीएसी होंगे

1. विद्यालयों में नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकों, गणवेश और शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा अन्य स्त्रोत सामग्री को समय पर वितरण को सुनिश्चित करना
2. एफ.एल.एन. के लिए एक अकादमिक स्त्रोत समूह का गठन करना
3. विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों की निगरानी करना, शिक्षकों और जिला स्तरीय अधिकारियों का व्यवसायिक विकास हेतु प्रशिक्षण करना

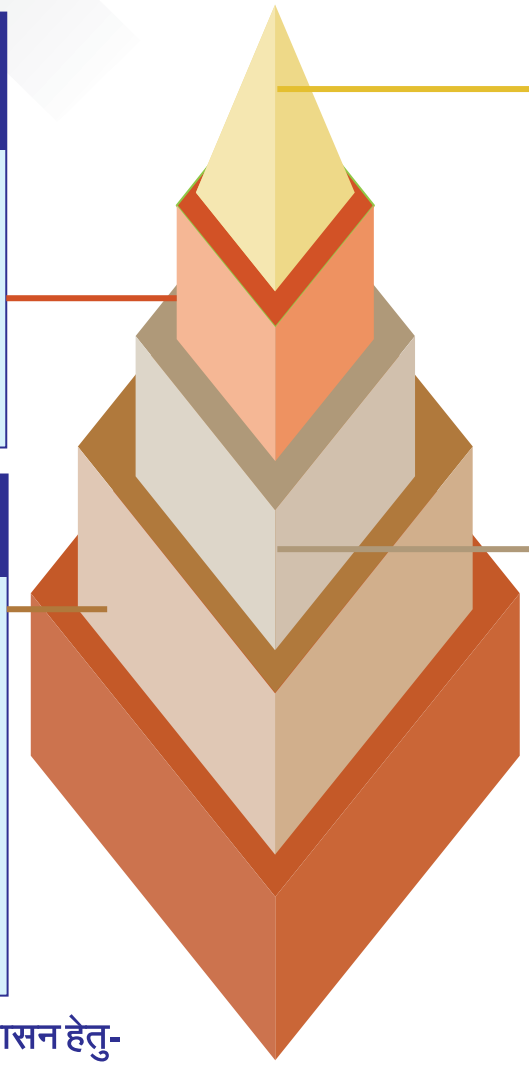

राज्य स्तरीय एफ.एल.एन. संचालन समिति
महत्वपूर्ण निर्णय लेना (प्रदेश के संबंधित विभागों के साथ समन्वय करते हुए।)

1 एफ.एल.एन. मिशन की घोषणा
2 प्रारंभिक कक्षाओं में दर्ज विद्यार्थियों के डेटाबेस का प्रतिचित्रण (मेंपिंग)
3. एफ.एल.एन. गतिविधियों की मॉनिटरिंग और समीक्षा तथा राज्य में क्रियान्वयन
4. प्रमुख पहलों और अंतिम रूप से प्राप्त किए जाने वाले उद्धेश्यों का अनुमोदन

जिला स्तरीय प्रोजेक्ट मेनेजमेंट समिति
इसमें कलेक्टर, सीईओ, डाईट डीपीसी, एपीसी होंगे

1. विद्यालयों में नि:शुल्क पुस्तकों, गणवेश और शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा अन्य स्त्रोत सामग्री के वितरण को सुनिश्चित करना
2. एफ.एल.एन. के लिए एक अकादमिक स्त्रोत समूह का विकास करना
3. विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों की निगरानी करना, शिक्षकों और प्रशासकीय अधिकारियों का प्रशिक्षण आयोजित करना

विद्यालय प्रबंधन समिति, पालक और समुदाय - प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा एसएमसी

1. सामुदायिक जागरूकता और भागीदारी के प्रयासों के सशक्तिकरण के लिए एसएमसी अत्यंत महत्वपूर्ण होंगी
2. पालकों और एसएमसी को विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक कक्षा पर वांछित प्रवीणता प्राप्त करने के बारे में स्पष्ट जानकारी होगी

राज्य द्वारा मिशन के सफल प्रशासन हेतु-

- एफ.एल.एन. पर केन्द्रित एक राज्य स्तरीय संचालन समिति का गठन किया जाएगा। समिति की अध्यक्षता निपुण भारत के संचालक करेंगे।
- निपुण भारत और एफ.एल.एन. मिशन के संदर्भ में राज्य और जिला स्तर की प्रोजेक्ट प्रबंधन इकाइयों के लिए अकादमिक और प्रशासकीय अमले का उन्मुखीकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किए जाएँगे।
- निपुण के दिशा-निर्देश दस्तावेजों के अनुरूप मिशन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण कार्यों की नियमित समीक्षा की प्रणाली विकसित की जाएँगी , जैसे – शिक्षकों की तैयारी, एफ.एल.एन. के लक्ष्यों में विद्यार्थियों की तैयारी आदि।

मिशन के कार्यक्रमों को व्यवस्थागत परिवर्तनों को लाने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा। मिशन की शासकीय प्रणाली यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण होगी, कि कार्यक्रमों के दृष्टिकोण को लागू किया जाए और इसकी निगरानी की जाए ताकि मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

राज्य स्तरीय

राज्य शिक्षा केंद्र, कार्यक्रम के क्रियान्वयन, उसके अंगीकरण और निगरानी के लिए रूपरेखा तैयार करेगा। प्रशासकीय संरचनाओं का उद्देश्य – आदर्श विद्यालयों, आदर्श कक्षाओं और अधिकारियों की जिम्मेदारियों की रचना करना है, मिशन की सफलता सुनिश्चित की जा सके। प्रमाण प्रदर्श यह संदेश भेजने के लिए सहायक होंगे की लक्ष्य वास्तविक और प्राप्त किए जाने योग्य हैं। कार्यक्रम को मिशन मोड में संचालित करने का अर्थ है, कि प्रत्येक हितधारक कार्य करने के लिए तैयार है, और उसे अपनी भूमिका के बारे में पर्याप्त और स्पष्ट जानकारी है।

जिला स्तरीय

सभी हितधारक कार्यक्रमों के तालमेल और प्रभावशीलता में सुधार के लिए सतत रूप से काम करेंगे, लेकिन सबसे अच्छे परिणाम तब प्राप्त होंगे, जब मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों में सभी हितधारक और विभिन्न पहल एक तालमेल में संचालित होंगे। यह विकासखण्ड और डाइट स्तर पर होगी । कक्षा या विद्यालय के लिए पृथक-पृथक नही होगी। इससे कार्यक्रमों और विचारों का पूरे राज्य में विस्तार किया जा सकेगा। ये आदर्श जिले और संकुल मिशन की सफलता का प्रमाण होंगे और प्रदेश के अन्य जिलों और समूहों के लिए प्रेरणास्रोत होंगे।

विकासखण्ड तथा संकुल स्तरीय

विकासखण्ड और संकुल संसाधन केंद्रों को शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण, सलाह और अनुशिक्षण में आदर्श क्रियाविधियों के संचालन की आवश्यकता होगी। उन्हें विकासखण्ड / संकुल में शिक्षकों के लिए सूचना आदान-प्रदान करने और सहायता देने में सक्षम होने के लिए एक नवाचार केंद्र बनने की आवश्यकता होगी। मिशन की विभिन्न पहलों को क्रियान्वित करने और शिक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए, एक सशक्त विकासखण्ड और संकुल अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

विद्यालय स्तरीय

मिशन सफल होगा इस विश्वास को मजबूत बनाने के लिए - आदर्श कक्षाओं, आदर्श विद्यालयों, आदर्श समुदायों, और आदर्श एस.एम.सी. का निर्माण महत्वपूर्ण है। यह कल्पना की जाती है, की भविष्य में सभी कक्षाएँ और विद्यालय राज्य के लिए आदर्श विद्यालय बन जाएँगे, जहाँ विद्यार्थियों को सीखने में आनंद आएगा और वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यह महत्वपूर्ण है, कि प्रत्येक हितधारक – पालक, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, स्वयंसेवक और सामुदायिक चैंपियन अपनी भूमिका के महत्व को समझते हुए हमारे विद्यार्थियों को सीखने और समृद्ध करने हेतु एक सक्षम वातावरण बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

मिशन

अंकुर

अभियान नींव की मजबूती का

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

जिला शिक्षा अधिकारी

जिला परियोजना समन्वयक

विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी

विकासखण्ड स्रोत समन्वयक

विकासखण्ड अकादमिक समन्वयक

प्रधानपाठक

शिक्षक

क्लस्टर अकादमिक समन्वयक

विद्यालय प्रबंधन समिति

स्वयंसेवक

समुदाय

निजी विद्यालय

पालक

मिशन में भूमिकाएँ

राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश

मिशन अंकुर

राज्य शिक्षा केंद्रः भूमिकाएँ एवं उत्तरदायित्व

एफ.एल.एन. में विभिन्न हितधारकों के साथ उचित समन्वय और सहयोग के लिए, राज्य शिक्षा केंद्र, एक नोडल अकादमिक प्राधिकरण के रूप में कार्य करेगा। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के साथ मिलकर राज्य शिक्षा केंद्र, एक पूरक और समन्वित भूमिका निभाएगा जिससे विद्यालयों और शिक्षकों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकेंगी।

- मिशन के लिए वार्षिक रोडमैप तथा राज्य और जिलों के लिए वार्षिक क्रियान्वयन योजना तैयार करने में सहायता करना।
- राष्ट्रीय स्तर के लक्ष्यों के आधार पर राज्य और जिला पीएमयू के लिए कार्रवाई योग्य लक्ष्य निर्धारित करना।
- एफ.एल.एन. विषयांशों पर शिक्षकों के सेवा-कालीन प्रशिक्षण हेतु योजना तैयार करना।
- राज्य, जिला और विकास खण्ड स्तर पर गहन जागरूकता अभियानों के माध्यम से समुदायों, अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य प्राप्त करने हेतु प्रेरित करना।
- कार्यशालाओं के माध्यम से एक-दूसरे जिले से सीखने को बढ़ावा देना और जिलों, विकासखण्डों, संकुलों और विद्यालयों के मध्य सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करना।
- स्वतन्त्र, रचनात्मक और समग्र आकलन का डिजाइन और उसका क्रियान्वयन करना।
- शिक्षकों के विद्यालय से संबंधित प्रशासकीय कार्य के कार्य-बोझ को कम करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी, एमआईएस, ई-शासन आधारित समाधान डिजाइन करना।
- बहुभाषी शिक्षा पर संबंधित हितधारको यथा - शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, एससीईआरटी, डाईट तथा शिक्षा प्रशासकों को जागरूक कर उनका क्षमता विकास करना।
- राज्य के लिए एक व्यापक संचार-संवाद योजना बनाना।
- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु प्रोजेक्ट प्रबंधन इकाईयों की सहायता करना।

राज्य शिक्षा केंद्र: भूमिकाएँ एवं उत्तरदायित्व

मिशन अंकुर

डाईट यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, कि राज्य शिक्षा केंद्र के विज़न और योजनाओं का जिले में क्रियान्वयन किस प्रकार सुनिश्चित किया जाए। डाइट्स द्वारा निम्न कार्य किए जाएंगे –

जिला विशिष्ट कार्यों में सहायता के लिए एक जिला स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करना।

जिलों में प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षणों का क्रियान्वयन और मॉनिटरिंग।

एफ.एल.एन. के सन्दर्भ में जिले में एक अकादमिक स्त्रोत समूह का गठन करना।

विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में अंतर को पाटने में सहयोग हेतु डिपस्टिक, बेसलाइन, तथा एन्डलाइन मापन हेतु राज्य शिक्षा केंद्र को सहायता करना।

शिक्षकों के लिए स्थानीय भाषा में व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल और अन्य संसाधनों का विकास करना।

मूलभूत साक्षरता और संख्या-ज्ञान से संबंधित गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली समस्याओं के समाधान हेतु कक्षा, विद्यालय, संकुल, विकासखण्ड स्तर पर क्रियात्मक शोध करना।

राज्य की पाठ्यचर्या के अनुरूप राज्य में प्रभावी सभी भाषाओं में ई-विषय-सामग्री का विकास करने में राज्य शिक्षा केंद्र को सहयोग करना।

नए भर्ती किए गए शिक्षकों का विशेष रूप से एफ.एल.एन. पर अभिमुखीकरण कार्यक्रमों का

मासिक समीक्षा बैठकों के माध्यम से जिले में मिशन अंकुर की प्रगति और उसका मूल्यांकन करना।

मिशन के कार्यों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने के लिए हितधारकों का क्षमतावर्धन करना।

ईसीसीई से कक्षा 3 तक के विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक आकर्षक, आनंददायी और अभिनव अधिगम सामग्री का विकास करना।

समग्र प्रगति कार्ड (होलिस्टिक प्रोग्रेस रिपोर्ट कार्ड) के माध्यम से, मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान में विद्यार्थियों की प्रगति और उपलब्धियों का आकलन करने में शिक्षकों को सक्षम बनाना।

मिशन अंकुर

डी.पी.सी, डी.इ.ओ. और बी.ई.ओ.
भूमिकाएँ एवं दायित्व

जिला और विकासखण्ड मिशन के भाग के रूप में डीईओ तथा बीईओ की सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रमुख भूमिका है

विद्यालयों का प्रभावी मॉनिटरिंग, मेन्टोरिंग तथा निरीक्षण करना।

एफ.एल.एन. पर आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षणों की निगरानी करना, और प्रधानाध्यापकों, एसएमसी, बीआरसी, बीएसी एवं सीएसी की क्षमता संवर्धन को सुनिश्चित करना।

मिशन के लक्ष्यों की जिला, विकासखण्ड में प्रगति की निगरानी और मॉनिटरिंग करना।

समय-समय पर नियमित कक्षाओं का अवलोकन कर मिशन की प्रगति की निगरानी करना ।

जिला कलेक्टर (जिला संचालन समिति) और जिला स्तर पर मिशन के उप संचालक के रूप में उन्हें सहायता करना।

विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकों, गणवेश, शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा डिजिटल सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

स्वतंत्र आकलन और समग्र आकलन के संचालन के लिए जमीनी स्तर पर सहायता करना।

अधिगम प्रतिफलों और उपलब्धि सर्वेक्षणों के प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों (केपीआई) की मॉनिटरिंग करना।

बी.आर.सी., बी.ए.सी और सी.ए.सी. : भूमिकाएँ एवं दायित्व

मिशन अंकुर

बीएसी और सीएसी मूलभूत शिक्षा के लिए नई शैक्षणिक क्रियाविधियों को अपनाने में, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को सहायता और अकादमिक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य करेंगे।

एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु की जा रही गतिविधियों का पर्यवेक्षण और मॉनिटरिंग हेतु प्रमुख एजेंसी के रूप में कार्य करना।

विद्यालय स्तर पर कक्षा-शिक्षण की शिक्षण गतिविधियों में गुणवत्ता हेतु, मेंटोर शिक्षक और विद्यालय नेतृत्व द्वारा सुधार करना।

एफ.एल.एन. में विद्यालय और सामुदायिक सहभागिता में सुधार के लिए - विद्यालय नेतृत्व, विद्यालय प्रबंधन समितियों, समुदाय के सदस्यों और स्थानीय अधिकारियों के साथ सहयोग करना।

निकट की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं, सिविल सोसाइटी संगठन, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के ऐसे शिक्षा विशेषज्ञों का डेटा-बेस निरंतर अद्यतन करते रहना, जो एफ.एल.एन. के लिए स्रोत समूह के रूप में सहभागिता कर सकें।

विद्यालयों के व्यवस्थित, प्रभावी और सभी तक पहुँच को सुविधाजनक बनाने के लिए विद्यालय भ्रमण की अग्रिम योजना बनाना।

विद्यालय भ्रमण के समय बच्चों के साथ गतिविधियाँ और शिक्षकों के साथ चर्चा करना। भ्रमण के समय एफ.एल.एन. की प्रगति पर चर्चा करने के लिए पालकों को आमंत्रित किया जा सकता है, या उनसे बातचीत की जा सकती है।

कक्षा में आकर्षक, आनंददायी और अभिनव शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा शिक्षण विधियों के उपयोग पर ध्यान केन्द्रित करना।

भ्रमण के दिन ही अपनी टिप्पणियों और विशिष्ट फीडबैक को संबन्धित से साझा करना।

विद्यालय भ्रमण के समय पाठ योजनाओं से परिचित होना।

एफ.एल.एन. के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए एक चेक लिस्ट के रूप में अवलोकन और फीडबैक देने के लिए विशिष्ट मानदण्ड विकसित करना।

मिशन अंकुर

प्रधानाध्यापक और शिक्षक
भूमिकाएँ एवं दायित्व

"किसी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता से अधिक नही हो सकती"

शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के जीवन में, विशेष रूप से उनके मूलभूत वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षाशास्त्र के अग्रणी और शिक्षकों के एक सहायक मित्र के रूप में नेतृत्व करना।
- एफ.एल.एन. मिशन के लिए सामुदायिक भागीदारी हेतु एसएमसी के सहयोग से योजना बनाना और उसका क्रियान्वयन करना।
- मूलभूत शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों में सीखने को मनोरंजन बनाना और समस्या समाधान कौशल का विकास करना।
- दक्षता आधारित अधिगम की ओर बदलाव, जो की विद्यार्थियों के अधिगम प्रतिफलों पर केन्द्रित होंगे।
- परीक्षाओं सहित अधिगम मूल्यांकन में, विषयवस्तु के स्थान पर कौशल या अवधारणा के विकास पर अधिक बल देना। शिक्षण में सतत आकलन को एकीकृत करना।
- दैनिक जीवन की घटनाओं को दोहराते हुए कक्षा में समावेशी अधिगम वातावरण बनाना।
- दक्षताओं पर विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी करना और पिछड़े विध्यार्थियों की सहायता करना।
- बच्चों की बातों को सुनना और उनके समग्र पालन-पोषण हेतु उनके सामाजिक और भावनात्मक हितों को सुनिश्चित करना।
- एफ.एल.एन. दक्षताओं की प्रगति पर नजर रखने के लिए एफ.एल.एन. के क्रियान्वयन हेतु स्पष्ट और विस्तृत योजना बनाना।
- सभी दक्षताओं में अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की प्रगति का अभिलेख रखना।

एसएमसी, पालक और समुदाय -

"बच्चे को विकसित करने में पूरे गाँव का योगदान होता है !"

मिशन अंकुर

विद्यालय प्रबंधन समितियों की भूमिका

- समुदाय की जागरूकता और भागीदारी प्रयासों से सार्थक रूप से जुड़ाव रखना।
- जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सक्रीय भागीदारी करना।
- प्रत्येक कक्षा के लिए एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्यों के प्रति सचेत रहना।
- शाला प्रबंधन समितियाँ तथा समुदाय यह सुनिश्चित करे, की सभी स्कूली बच्चों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण हो तथा बच्चों के स्वास्थ्य हेतु सुपोषण के प्रावधानों का पालन हो।

पालकों की भूमिका

- अपने बच्चों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करना।
- शिक्षकों के साथ नियमित रूप से सम्पर्क रखें और शिक्षक-पालक संघों की बैठकों में सहभागिता करना।
- पुस्तकें पढ़ना, खेल खेलना, समूह गायन, कविताओं का गायन जैसी गतिविधियाँ घर में नियमित रूप से करना।

समुदाय की भूमिका

- पंचायतें यह सुनिश्चित करें की सभी बच्चों का उपयुक्त स्तर पर विद्यालयों में शत-प्रतिशत नामांकन हो।
- यह सुनिश्चित करना की शाला त्यागी दर शून्य हो और कोई बच्चा शाला के बाहर अर्थात अप्रवेशी न रहे।
- एफ.एल.एन. के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता के लिए स्वयंसेवी और पालकों को विद्यालय से जोडना।
- शिक्षकों और आंगनवाडी सेविका/सहायिका के सहयोग से बच्चों के लिए स्कूल तैयारी मेला/प्रतिभा-पर्व कार्यक्रम जैसी गतिविधियों का आयोजन करना।

मिशन अंकुर

स्वयंसेवकों की भूमिका

वर्ष 2026-27 तक राज्य शिक्षा केंद्र और डाइट कक्षा 3 के सभी विद्यार्थियों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्य की दिशा में योगदान करने में सहकर्मी समूहों और अन्य स्थानीय स्वयंसेवकों को सम्मिलित करने के लिए अपने स्वयं के दिशा-निदेश तैयार करेंगे।

स्वयंसेवकों द्वारा कक्षा 1,2,3 स्तर पर बच्चों का 1:1 के आधार पर अनु-शिक्षण करना।

मिशन के लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त करने के उद्धेश्य से स्वयंसेवकों को 'ईच वन टीच वन' अभियान से जोड़ना।

विद्यार्थियों को सहायता करने और एक स्वयंसेवक के रूप में सहपाठी-अनुशिक्षण को बढ़ावा देने की दृष्टि से अभिनव मॉडल्स स्थापित करना।

विद्यार्थियों के घर पर सीखने के लिए उनके घर जाकर जागरूकता अभियान का संचालन करना। माताओं, पालकों और स्व-सहायता समूहों आदि के साथ घर-घर जाने के लिए समन्वय करना।

एफ.एल.एन. के महत्त्व और इससे बच्चों के अधिगम प्रतिफलों पर पड़ने वाले प्रभावों पर जागरूकता पैदा करना।

एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रमुख स्तरों पर बुनियादी दक्षताओं और अनुप्रयोगों के आकलन में सहभागिता करना।

बुनियादी साक्षरता हेतु लक्ष्य

बालवाटिका या आयु 5-6 वर्ष

मौखिक भाषा

1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करते हैं।
2. गीत/कविताओं को समझ कर हाव-भाव के साथ गाते हैं।

पठन

1. कहानी की किताबों को देखकर चित्रों की सहायता से पढ़ने का प्रयास करते हैं।
2. दैनिक जीवन में बार-बार उपयोग होने वाले परिचित शब्दों (पैकेट / रेपर / साइट वर्डस) आदि को पहचानकर बता पाते हैं।
3. अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं।
4. 2 से 3 अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ते हैं।

लेखन

1. विभिन्न गतिविधियों के दौरान सीखे गए अक्षरों को लिखने का प्रयास करते हैं।
2. आड़ी-तिरछी लकीरों तथा चित्रों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करते हैं।
3. पेंसिल को ठीक से पकड़ते हुए सीखे गए अक्षरों का लेखन करते है।
4. अपना नाम पहचानते और लिखते हैं।

आधारभूत संख्या ज्ञान के लिए लक्ष्य

बालवाटिका
या
आयु 5-6 वर्ष

4x3=12

1. वस्तुओं की गणना करके 10 तक की संख्याओं से सहसंबंधित करता है ।
2. 10 तक की संख्याओं को पहचानता और पढ़ता है ।
3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में 'से अधिक'/'से कम'/ 'बराबर' आदि शब्दों का उपयोग करते हुए दो शब्दों समूहों की तुलना करता है ।
4. संख्याओं /वस्तुओं / आकृतियों घटनाओं को एक क्रम में व्यवस्थित करता है ।
5. वस्तुओं को उनके अवलोकन योग्य विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करता है और वर्गीकरण के मानदंड बता पाता है ।
6. आस-पास की विभिन्न वस्तुओं की तुलना करने के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों जैसे लंबा, सबसे लंबा, छोटा, सबसे छोटा हल्का आदि का उपयोग करता है।

बुनियादी साक्षरता हेतु लक्ष्य

कक्षा-1 या आयु 6-7 वर्ष

मौखिक भाषा

1. अपनी आवश्यकताओं और परिवेश के बारे में दोस्तों तथा शिक्षक के साथ बाचतीच करते हैं।
2. कक्षा में उपलब्ध लिखित सामग्री पर बातचीत करते हैं।
3. हाव-भाव के साथ गीत/कविता सुनाते हैं।

पठन

1. कहानी के आदर्श वाचन के समय सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। कहानी के दौरान और बाद में सवालों के जवाब देते हैं। सुनी हुई कहानी का मुखौटे कठपुतलियों के साथ अभिनय करते हैं।
2. ध्वनि प्रतीक के संबंध के साथ स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्पैलिंग) वाले शब्दों को पढ़ते हैं।
3. अपठित गद्यांश से आयु अनुरुप कम-से-कम 4 से 5 सरल शब्दों वाले छोटे वाक्य पढ़ते हैं।

लेखन

1. परिचित संदर्भों (कहानी/कविता/पर्यावरण आदि) से संबंधित सामग्री में आने वाले मात्रिक शब्दों को लिखने का प्रयास करते हैं।
2. विचारों को व्यक्त करने के लिए रोचक ढंग से लिखना या चित्र बनाना, कार्यपत्रक पर नाम लिखना, बधाई संदेश और स्पष्ट चित्र बनाते हैं।

आधारभूत संख्याज्ञान के लिए लक्ष्य

कक्षा-1
या
आयु 6-7 वर्ष

1. 20 तक की संख्या में वस्तुओं को गिनता है ।
2. 99 तक की सख्याएँ पढ़ता और लिखता है ।
3. दैनिक जीवन की स्थितियों में 9 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करता है ।
4. अपने चारों और तीन आयामी (3डी) आकृतियों के भौतिक गुणों का अवलोकन और वर्णन करता है, जैसे गोल/ सपाट सतह, कोनों और किनारों की संख्या आदि ।
5. गैर–मानक, असमान इकाइयाँ जैसे बित्ता, कदम, उँगलियों आदि का उपयोग करके लंबाई तथा गैर–मानक एक समान इकाइयाँ जैसे कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके धारियता का अनुमान लगाता और सत्यापित करता है ।
6. आकृतियों और संख्याओं का उपयोग करके छोटी कविताएँ और कहानियाँ बनाता और सुनाता है ।

बुनियादी साक्षरता हेतु लक्ष्य

कक्षा-2
या
आयु 7-8 वर्ष

मौखिक भाषा

1. कक्षा में उपलब्ध लिखित सामग्री के बारे में बातचीत करते हैं।
2. बातचीत में सक्रिय भागीदारी करते हुए दूसरों को सुनते हैं और प्रश्न पूछते हैं।
3. गीत / कविता हाव-भाव के साथ सुनाते हैं।
4. कहानियों / कविताओं / अन्य लिखित सामग्री आदि में परिचित शब्दों को दोहराते हैं।

पठन

1. बाल साहित्य / पाठ्यपुस्तक से कहानियों को पढ़कर पुनः सुनाते हैं।
2. दिए गए शब्द में वर्ण / मात्रा से नए शब्द बनाते हैं।
3. 8 से 10 वाक्यों के सरल अपठित गद्यांश को उचित गति (लगभग 30 से 45 शब्द प्रति मिनट) और स्पष्टता के साथ पढ़ते हैं।

लेखन

1. स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए छोटे / सरल वाक्यों को सही ढंग से लिखते हैं।
2. संज्ञा शब्द, क्रिया शब्द और विराम चिह्नों को पहचान कर उनका उपयोग करते हैं।

आधारभूत संख्याज्ञान के लिए लक्ष्य

कक्षा-2
या
आयु 7-8 वर्ष

1. 999 तक की संख्याएँ पढ़ता और लिखता है ।
2. दैनिक जीवन की परिस्थितियों में 99 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करता है, योग 99 से अधिक नहीं हो ।
3. बार–बार जोड़ के रूप में गुणा को समझता है और समान वितरण/साझाकरण के रूप में विभाजन करता है ।
   2, 3 और 4 के गुणन तथ्यों (तालिकाओं) का निर्माण करता है ।
4. रॉड, पेंसिल, धागा, कम, चम्मच, मग इत्यादि जैसी गैर–मानक, एक समान इकाइयों का उपयोग करके लंबाई/दूरी/धारिता का अनुमान लगाता है और मापन करता है ।
   साधारण तुला का उपयोग करके वजन की तुलना करता है ।
5. आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार आदि द्वि-आयामी (2–डी) आकृतियों की पहचान और वर्णन करता है ।
6. दूर/निकट, अंदर/बाहर, ऊपर/नीचे, बाएं/दाएं, आगे/पीछे, ऊपर/नीचे आदि जैसी स्थानिक शब्दावली का उपयोग करता है ।
7. संख्याओं और आकृतियों का उपयोग करके सरल पहेलियों को बनाता और हल करता है ।

बुनियादी साक्षरता हेतु लक्ष्य

कक्षा-3
या
आयु 8-9 वर्ष

मौखिक भाषा

1. उचित शब्दावली एवं स्पष्टता के साथ अपनी घर की भाषा अथवा स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हुए बातचीत करते हैं ।
2. कक्षा में उपलब्ध मुद्रित सामग्री के बारे में बातचीत करते हैं।
3. स्वयं की रुचि अनुसार प्रश्न पूछना, अनुभव बताना, दूसरों की बात सुनने और जवाब देने के लिए बातचीत में शामिल होते हैं ।
4. कविताओं को हावभाव के साथ व्यक्तिगत रूप से और समूह में सुनाते हैं ।

पठन

1. परिचित पुस्तकों/ पाठ्यपुस्तकों में अपनी रुचि के अनुसार जानकारीपरक सामग्री खोजते हैं।
2. आयु अनुरूप अपरिचित गद्यांश को कम से कम 60 शब्द प्रति मिनट की गति से समझ के साथ पढ़ते हैं।
3. दिए गए निर्देशों को पढ़कर उनका पालन करते हैं।
4. आयु अनुरूप 8–10 वाक्यों की अपरिचित कहानी अथवा गद्यांश को पढ़कर उससे संबंधित 4 प्रश्नों में से 3 का सही जवाब दे पाते हैं।

लेखन

1. विभिन्न उद्देश्यों के लिए छोटे संदेश लिखते हैं।
2. लेखन में क्रिया शब्द, संज्ञा और विराम चिह्नों का उपयोग करते हैं।
3. व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य लिखते हैं।
4. व्याकरण की दृष्टि से स्वयं सही वाक्यों के साथ छोटे गद्यांश और लघु कथाएँ लिखते हैं।

आधारभूत संख्या ज्ञान के लिए लक्ष्य

कक्षा-3
या
आयु 8-9 वर्ष

1. 9999 तक की संख्याएँ पढ़ता और लिखता है ।
2. 999 तक की संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करके दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान करता है, योग 999 से अधिक न हो ।
3. संख्या 2 से 10 तक गुणन तथ्यों (सारणी) का निर्माण का उपयोग करता हैं और विभाजन तथ्यों का उपयोग करता है ।
4. मानक इकाइयों जैसे मीटर, किलोमीटर, ग्राम, किलोग्राम, लीटर आदि का उपयोग करके लंबाई/दूरी, वजन और धारिता का अनुमान लगाता है और मापता है ।
5. मूलभूत द्वि (2-डी) आयामी व तीन (3-डी) आयामी (ठोस आकृतियों) की पहचान करता है और उनको आपस में संबंधित करता है, आकृतियों के गुणों का वर्णन करता है, जैसे फलक, किनारों व कोनों की संख्या आदि ।
6. कैलेण्डर पर एक विशेष तिथि और संबंधित दिन की पहचान करता है, घंटे और आधे घंटे का उपयोग करते हुए घटी पर समय बताता है ।
7. वस्तुओं के संग्रह में, आधे, एक-चौथाई, तीन-चौथाई व पूरे भाग की पहचान करता है ।
8. संख्याओं , घटनाओं और आकृतियों पर आधारित सरल पैटर्न के नियमों की पहचान करता है, उनका विस्तार करता हैं व उनके बारे में बताता है ।